वर्ष : 33 | अंक : 172 | पृष्ठ : 8 | मुंबई, शुक्रवार, 6 सितंबर 2024 | RNI: MAHHIN/49994/91 | मूल्य : 3 रुपए | epaper.dobajedopahar.com | संपादक : अरुण लाल

दो बजे दोपहर

मुंबई, नवी मुंबई, ठाणे, पालघर, रायगढ़, नासिक, पुणे से एक साथ प्रकाशित

पत्रकारिता पावर नहीं रिस्पांसिबिलिटी है

गिरफ्तार हुआ मूर्तिकार

शिवाजी की मूर्ति बनाने में जंग लगी सामग्री का हुआ था इस्तेमाल

पुलिस ने किया कोर्ट में दावा

अमित बृज । मुंबई

महाराष्ट्र के मालवन के राजकोट किले में गिरी छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति में जंग लगी सामग्री का इस्तेमाल हुआ था। सिंधुदुर्ग पुलिस ने गुरुवार को कोर्ट में यह खुलासा किया। गुरुवार को आरोपी मूर्तिकार और ठेकदार जयदीप आप्टे और सलाहकार चेतन पाटिल को कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने 10 सितंबर तक पुलिस रिमांड का आदेश दिया है। पुलिस ने कोर्ट में बताया कि मूर्ति के पास जो सामग्री बरामद की गई है। वे जंग लगी हुई थी। यह पता लगाने की जरूरत है कि मूर्ति निर्माण में घटिया गुणवत्ता वाली वस्तुओं का इस्तेमाल किया गया था या नहीं। पुलिस ने कोर्ट से कहा कि आरोपियों से पूछताछ की जरूरत है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि 35 फीट ऊंची मूर्ति को डिजाइन करने और बनाने में उन लोगों ने किस तरह की सामग्री का इस्तेमाल किया था।

आप्टे और पाटिल को 10 सितंबर तक पुलिस रिमांड

शिवाजी की मूर्ति 26 अगस्त को मालवन तहसील में राजकोट किले में टूट कर गिर गई थी। लगभग नौ महीने पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नौसेना दिवस के अवसर पर इस मूर्ति का अनावरण किया था। मूर्ति गिरने के बाद पुलिस की ओर से केस दर्ज किया गया था। उसके बाद चेतन पाटिल को 30 अगस्त को कोल्हापुर से गिरफ्तार किया गया था, जबकि आप्टे को 10 दिन बाद बुधवार रात ठाणे जिले के कल्याण से अरेस्ट किया गया था। महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले की एकस्थानीय अदालत में चेतन पाटिल और जयदीप आप्टे को पेश किया गया। कोर्ट ने उन्हें 10 सितंबर तक पुलिस रिमांड में भेजने का आदेश दिया। पुलिस ने कहा कि आरोपियों से पूछताछ करके यह पता लगाना होगा किमूर्ति बनाने के लिए इस्तेमाल की गई सामग्री कहां से खरीदी और क्या वे घटिया गुणवत्ता की थीं।

मूर्ति के निर्माण में घटिया सामग्री का इस्तेमाल

रिमांड नोट में पुलिस ने कोर्ट को सूचित किया कि मूर्ति के निर्माण में इस्तेमाल की गई लोहे की छड़ें मूर्ति के नटबोल्ट, और अन्य सामग्री जंग लगी हुई थी। यह देखने की जरूरत है कि आरोपियों ने मूर्ति के लिए किस तरह की सामग्री का इस्तेमाल किया और क्या वे घटिया गुणवत्ता की थीं। पुलिस ने कहा कि उसे मूर्ति के लिए इस्तेमाल की गई सामग्री के नमूने और सांचे भी इकट्ठा करने होंगे। पुलिस ने कहा कि यह पता लगाने की जरूरत है कि क्या आरोपियों ने मूर्ति को डिजाइन और निर्माण करते समय व्यवहर्यता ऑडिट किया था। पुलिस ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि आरोपी ने मूर्ति की संरचना बनाने से पहले पानी, भूकंप, हवा और इलाके की स्थलाकृति के मापदंडों पर विचार किया था या नहीं, इसकी जांच की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि यह भी पता लगाया जाना चाहिए कि क्या आरोपी मूर्ति की संरचना बनाते समय मूर्ति की लंबी उम्र के बारे में जानते थे।

पुलिस ने शिवाजी महाराज की मूर्ति बनाने वाले 39 साल के मूर्तिकार जयदीप आप्टे को गिरफ्तार कर लिया है। आप्टे कल्याण में ही एक आर्ट कंपनी चलाता है। हालांकि, उसे बड़ी मूर्तियां निर्माण करने का कोई अनुभव नहीं है। वहीं, पुलिस के सूत्रों से पता चला है कि आरोपी की पत्नी ने ही पुलिस को उसके आने की टिप दी। वहीं, उसके दोस्त और परिवार उसे सरेंडर के लिए मना रहे थे। आप्टे 10 दिनों से पुलिस के रडार से बाहर चल रहा था। उसकी आखिरी लोकेशन 10 दिन पहले मालवान के पास उसके दोस्त के साथ मिली थी। उसने जहां मूर्ति गिरी थी, उस जगह का दौरा किया था। आप्टे को बुधवार को उनके घर के बाहर से गिरफ्तार किया गया। वह अपनी पत्नी को फोन कर बताया था कि वह अपने परिवार से मिलने वापस आ रहा है। पत्नी ने इसकी जानकारी पुलिस को दे दी।

निर्माणाधीन इमारत का स्लैब गिरा

3 मजदूरों की मौत, कई घायल

धीरज सिंह । मुंबई

मुंबई के मलाड इलाके में गुरुवार दोपहर के समय एक बड़ा हादसा हो गया। यहां अचानक से निर्माणाधीन इमारत का स्लैब गिर गया, जिसमें दबकर तीन मजदूरों की मौत हो गई। वहीं कई मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना मिलते ही पुलिस, फायर ब्रिगेड और BMC की टीम घटनास्थल पहुंच गई और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू कर दबे लोगों को मलबे से निकालना शुरू किया। पुलिस ने बताया कि घायलों को पास के एम। डब्ल्यू। देसाई अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है।

लापरवाही की जांच शुरू

स्थानीय एजेंसी ने लापरवाही की जांच शुरू की है। इसमें देखा जा रहा है कि बिल्डर की तरफ से सुरक्षा के क्या उपाय किए गए थे। स्थानीय पुलिस ने इस मामले में संज्ञान लेकर जांच शुरू कर दी है।

स्लम पुनर्वास के तहत बनाई जा रही है यह इमारत

हादसे की जानकारी देते हुए मुंबई नगर निगम ने बताया कि मलाड पश्चिम स्थित गोविंद नगर इलाके में कई इमारतें निर्माणाधीन हैं। निर्माणाधीन नवजीवन बिल्डिंग का स्लैब गुरुवार दोपहर करीब 12 ।30 बजे गिर गया। यह भवन स्लम पुनर्वास के तहत बनाया जा रहा है। यह भवन Gr+20 प्रकार का है। इस बिल्डिंग की 20वीं मंजिल का काम शुरू हो गया है। जब इस 20वीं मंजिल पर स्लैब बिछाने का काम चल रहा था, तभी अचानक स्लैब गिर गया।

हादसे में तीन मजदूरों की हुई मौत

मुंबई नगर निगम ने बताया कि स्लैब के गिरते ही कुछ मजदूर उसी के मलबे के नीचे दब गए। मौके पर चीख-पुकार मच गई। मजदूरों के साथियों ने आनन-फानन में घटना की जानकारी पुलिस को दी। सूचना मिलने पर पुलिस, फायर ब्रिगेड और नगर निगम की टीम मौके पर पहुंच गई और रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। रेस्क्यू टीम ने चार मजदूरों को बाहर निकाला और आनन-फानन में अस्पताल में भर्ती कराया। अस्पताल में जांच के दौरान डॉक्टरों ने तीन मजदूरों को मृत घोषित कर दिया, जबकि एक का इलाज चल रहा।

'लालबागचा राजा' की पहली झलक

मुंबई। देशभर में गणेश चतुर्थी को लेकर लोगों में भारी उत्साह है। इस बीच मुंबई के मशहूर लाल बाग के राजा यानी गणेश जी की प्रतिमा की पहली झलक सामने आई है, जिसे देखने के बाद भक्तों के मन में गजानन के प्रति भक्ति उमड़ रही है। लालबाग के राजा सार्वजनिक गणेश महोत्सव मंडल ने भगवान गणेश की पहली झलक भक्तों को दिखाई है। इस दौरान पारंपरिक लोक नृत्य प्रस्तुत किया गया और गायन हुआ। सैकड़ों श्रद्धालुओं की मौजूदगी में भगवान गणेश की पहली झलक दिखाई गई।

बुलेट ट्रेन परियोजना का 11वां पुल तैयार

मुंबई/अहमदाबाद। मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए गुजरात के नवसारी जिले में कावेरी नदी पर पुल 25 अगस्त, 2024 तक पूरा हो गया है। यह परियोजना के लिए गुजरात में नियोजित 20 नदी पुलों में से 11वां पुल है। नेशनल हाई-स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के अनुसार, यह पुल 120 मीटर लंबा है और तीन फुल-स्पैन गर्डरों द्वारा समर्थित है, जिनमें से प्रत्येक 40 मीटर लंबा है। पुल को सहारा देने वाले खंभों की ऊंचाई 13 से 21 मीटर तक है, जिसमें एक खंभे का व्यास 4 मीटर और तीन अन्य का व्यास 5 मीटर है। कावेरी नदी पुल वापी और बिलिमोरा बुलेट ट्रेन स्टेशनों के बीच स्थित है। अंबिका नदी की सहायक नदी गुजरात-महाराष्ट्र सीमा के पास वंसदा तालुका की पहाड़ियों से निकलती है। कावेरी नदी वापी स्टेशन से लगभग 46 किलोमीटर और बिलिमोरा स्टेशन से 4 किलोमीटर दूर है। इस परियोजना में अन्य पूर्ण हो चुके नदी पुलों में पार, पूर्णा, मिंधोला, अंबिका, औरंगा, वेंगानिया, मोहर, धाधर, कोलक और वत्रक नदियों पर बने पुल शामिल हैं। कावेरी नदी पुल का सफलतापूर्वक पूरा होना भारत के पहले हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम है।

जो गलती करता है, वहीं माफी मांगता है : राहुल गांधी

राहुल का पीएम मोदी पर डायरेक्ट अटैक

- राहुल गांधी ने सांगली में पतंगराव कदम की प्रतिमा का किया अनावरण
- कांग्रेस नेता ने इस मौके पर बीजेपी और आरएसएस पर साधा निशाना

दोपहर संवाददाता । मुंबई/सांगली

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने महाराष्ट्र के दौरे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को निशाने पर लिया। राहुल गांधी ने सिंधुदुर्ग में छत्रपति शिवाजी महाराज के स्टैच्यू का मुद्दा उठाते हुए कहा कि नरेंद्र मोदी ने शिवाजी महाराज का अपमान किया है। उन्हें सिर्फ शिवाजी महाराज से नहीं, महाराष्ट्र के हर व्यक्ति से माफी मांगनी चाहिए। राहुल गांधी ने कहा कि यहां कुछ दिन पहले छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति टूट गई। इसके बाद नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि मैं शिवाजी महाराज से माफी मांगता हूं। उनके माफी मांगने के अलग-अलग हो सकते हैं। इस मूर्ति का कान्ट्रैक्ट आरएसएस के किसी व्यक्ति को दिया गया हो। शायद प्रधानमंत्री कह रहे हों कि मुझे इसका कान्ट्रैक्ट मेरिट पर देना चाहिए था। मूर्ति के बनने में भ्रष्टाचार हुआ हो। शायद प्रधानमंत्री इसके लिए माफी मांग रहे हैं। आपने छत्रपति शिवाजी महाराज की मूर्ति बनाई, लेकिन ये ध्यान नहीं दिया कि वो खड़ी रहे। राहुल गांधी ने इसके साथ ही बीजेपी और पीएम मोदी को मणिपुर के मुद्दे पर घेरा और कहा कि पीएम मोदी वहां नहीं जा सकते हैं।

बीजेपी की नींद उड़ा रखी है

सांगली में कांग्रेस के दिवंगत नेता पतंगराव कदम की प्रतिमा का अनावरण करने के बाद राहुल गांधी ने कहा महाराष्ट्र कांग्रेस की विचारधारा की भूमि है। यहां पर कांग्रेस की विचारधारा घुसी हुई है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मलिल्लकार्जुन खरगे जब अपने कर्नाटक जाते हैं तो उनके चेहरे पर मुस्कान रहती है। इसी तरह से जब महाराष्ट्र आते हैं तो भी खुश रहते हैं। राहुल गांधी ने कहा कि इसी तरह की फीलिंग उनकी भी हैं। इसके बाद राहुल गांधी ने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को बब्बर शेर बताया और कहा कि आपने बीजेपी की नींद की उड़ा रही है। राहुल गांधी ने कहा देश में दो विचारधाराओं की लड़ाई है। एक विचारधारा नफरत फैलाकर लड़ा रही है। हम देश में अमन चैन चाहते हैं। मुहब्बत चाहते हैं। राहुल गांधी ने मणिपुर का जिक्र करते हुए कहा कि वहां पर बीजेपी के लोगों ने अगा लगाई है। ये जाति को जाति से लड़ा रहे हैं। इस कार्यक्रम में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एससीपी) के प्रमुख शरद पवार भी मौजूद रहे।

राहुल गांधी संग शरद पवार ..क्या अलग-थलग पड़े उद्धव ठाकरे

शिवसेना यूबीटी चुनाव से पहले कांग्रेस और एनसीपी से अलग थलग पड़ती नजर आ रही है। हुआ यूं कि सांगली में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी की गुरुवार को एक जनसभा हुई। शिवसेना (यूबीटी) के चीफ उद्धव ठाकरे को भी इस सभा में आमंत्रित किया गया था। शरद पवार इसका हिस्सा बने लेकिन उद्धव ने इवेंट से कन्नी काट ली।

बांद्रा रिक्लेमेशन की भूमि के व्यावसायिक विकास को हाई कोर्ट में चुनौती

मुंबई। महाराष्ट्र राज्य सड़क विकास निगम(एमएसआरडीसी)द्वारा बांद्रा रिक्लेमेशन की भूमि को व्यावसायिक विकास के लिए दिए जाने को जनहित याचिका दायर कर बॉम्बे हाई कोर्ट में चुनौती दी गयी है। इस भूमि के विकास से सीआरजेड के नियमों का उल्लंघन होने का आरोप है। अदालत ने इस पर केंद्र और राज्य सरकार से हलफनामा दाखिल कर 6 सप्ताह में जवाब मांगा है। याचिका में अदालत से यह निर्देश देने का अनुरोध किया गया है कि एमएसआरडीसी द्वारा सीआरजेड के नियमों का पालन करते हुए बांद्रा रिक्लेमेशन की भूमि पर व्यावसायिक विकास को प्रतिबंधित करें और भूमि को ग्रीन लैंड के रूप में बहाल करें।

मुंबई और ठाणे में बारिश का येलो अलर्ट

दोपहर संवाददाता । मुंबई

गणेशोत्सव के उत्साह के बीच मुंबई और आसपास के इलाकों में बारिश का सिलसिला एक बार फिर से शुरू हो गया है। गुरुवार को मुंबई में हल्की से मध्यम बारिश हुई। इस बीच भारतीय मौसम विभाग (IMD) ने मुंबई और ठाणे के लिए येलो अलर्ट जारी किया, जो शुक्रवार सुबह तक प्रभावी रहेगा। वहीं, रायगढ़ जिले के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग ने शुक्रवार तक मुंबई और ठाणे में बारिश की भविष्यवाणी की है। पूर्वानुमान के अनुसार, मुंबई, ठाणे और रायगढ़ में सप्ताहांत में सोमवार तक हल्की बारिश और गरज के साथ छींटे पड़ेंगे। गुरुवार दोपहर को आईएमडी ने मुंबई और ठाणे के लिए यलो अलर्ट जारी किया, जिससे यह संकेत मिलता है कि कुछ हिस्सों में भारी बारिश हो सकती है। वहीं, रायगढ़ जिले में शुक्रवार सुबह तक के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया, जिसमें भारी से बहुत भारी बारिश का खतरा जताया गया है।

गणेशोत्सव पर बारिश का असर

IMD के अनुसार शुक्रवार से बारिश की तीव्रता में कमी आएगी, लेकिन हल्की से मध्यम बारिश का सिलसिला वीकेंड तक जारी रहेगा। जबकि मुंबई में कोई विशेष चेतावनी नहीं है, रायगढ़ जिले के लिए अगले चार दिनों तक येलो अलर्ट जारी रहेगा। स्काईमेट वेदर सर्विसेज के महेश पलावत के अनुसार, मुंबई और उत्तरी कोंकण क्षेत्र में 10-11 सितंबर तक मध्यम बारिश जारी रहेगी। उन्होंने बताया, ₹बंगाल की खाड़ी में एक निम्न दबाव का क्षेत्र (LPA) बना हुआ है, जो मध्य प्रदेश और विदर्भ की ओर बढ़ेगा। इस कारण से मुंबई और आसपास के इलाकों में अच्छी बारिश होने की संभावना है।₹

मुंबई के जलाशयों में पानी का स्तर बढ़ा

बारिश के चलते मुंबई के सात प्रमुख जलाशयों में पानी का स्तर 98 ।24% तक पहुंच गया है, जो पिछले तीन वर्षों में सबसे अधिक है। 2023 में इसी दिन पानी का स्तर 90 ।54% था, जबकि 2022 में यह 98% तक पहुंच गया था। पिछले 24 घंटों में सबसे अधिक बारिश मिडल वैतरणा झील (39 मिमी) पर दर्ज की गई, उसके बाद अपर वैतरणा (32 मिमी), और मोडक सागर और भातसा झीलों पर 28 मिमी बारिश दर्ज की गई।

निर्णय | महाराष्ट्र सरकार का यू-टर्न, आत्महत्या करने वाले किसानों के हित में सरकार

किसानों के परिजनों को मिलती रहेगी राहत राशि

मुनीब चौरसिया । मुंबई

महाराष्ट्र में इसी साल विधानसभा के चुनाव होने हैं। इसी बीच राज्य सरकार ने अपने एक फैसले पर यू-टर्न लिया है। दरअसल, महाराष्ट्र के राजस्व विभाग ने एक आदेश जारी कर कहा गया था कि जो किसान खुदकुशी करेंगे, उनके परिजन को राहत राशि नहीं दी जाएगी। इस आदेश पर विपक्षी दलों ने हंगामा किया था। इसके बाद सरकार ने अपने फैसले को वापस ले लिया।

जानें क्या था आदेश जिस पर विपक्ष हुआ हमलावर ?

जानकारी के अनुसार, मंगलवार को आत्महत्या करने वाले किसानों के परिजन की मदद में इमरजेंसी फंड की मंजूरी रोकने के लिए एक सरकारी संकल्प (जीआर) जारी किया था। यह एक तरह का सरकारी आदेश था। इस आदेश का सर्कुलर सभी संभागीय आयुक्तों और जिला कलेक्टरों को भेजा गया था। इस योजना के तहत आत्महत्या करने वाले किसानों के परिवारों को आर्थिक मदद दी जाती है। इस योजना से राज्य के मराठवाड़ा और विदर्भ क्षेत्र के लोगों को मदद मिलती रही है। लेकिन जब राजस्व विभाग ने इसे रोकने का फैसला किया तो विपक्ष ने खूब हंगामा किया। बाद में सरकार ने इसे वापस ले लिया।

विपक्ष ने उठाए थे सवाल

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी शरद पवार के गुट के नेता जितेंद्र अव्हाड ने एक्स पर लिखा, 'आत्महत्या करने वाले किसानों के उत्तराधिकारियों के लिए राहत राशि बंद कर दी गई। राजस्व विभाग की तरफ से इस बाबत एक सर्कुलर भी जारी किया गया है। लड़की बहन योजना में किसानों की आत्महत्या की क्या वजह है? इस योजना के लिए निधि को लड़की बहन योजना में दे दिया गया?'

एक लाख रुपए की मिलती थी मदद : सरकार की तरफ से जो जीआर जारी किया गया उसमें कहा गया था कि जिला स्तर की समितियां आत्महत्या करने वाले पीड़ितों की तुरंत मदद करने में समर्थ नहीं हो सकेंगी। आत्महत्या करने वाले किसानों के परिवारों को इस आदेश के पहले राज्य सरकार की तरफ से एक लाख रुपए की राहत राशि दी जाती थी। इस नए सर्कुलर के बाद राजनीतिक माहौल गरमा गया। विपक्ष ने राज्य सरकार पर आरोप लगाया है लाडकी बहिन योजना की वजह किसानों के विरोध में यह फैसला लिया गया है। विपक्ष की मानें तो मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की सरकार ने 45 हजार करोड़ रुपए इस योजना के लिए रख लिए हैं।

बीजेपी नेता ने क्या कहा? : बीजेपी के मंत्री सुधीर मुनगंटीवार ने कहा, 'इस जीआर को निष्पक्ष तरीके से देखना चाहिए। इसके लिए लड़की बहिन योजना को क्यों दोष दिया जा रहा है। सरकार के लिए योजनाओं को चलाने के लिए पर्याप्त फंड मौजूद है।' मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद एकनाथ शिंदे ने राज्य को किसानों को आत्महत्या से मुक्त करने का संकल्प लिया था। पिछले छह महीनों में विदर्भ में 618 और मराठवाड़ा में 430 किसानों ने आत्महत्या की है

प्रदूषण से बढ़ रहा पुरुषों और महिलाओं में बांझपन

शोधकर्ताओं ने 30-45 वर्ष के पुरुषों-महिलाओं से जुड़े आंकड़ों का किया विश्लेषण

एजेंसी । नई दिल्ली

अगर पुरुष लंबे समय तक पीएम 2.5 प्रदूषण के संपर्क में रहते हैं तो उनमें बांझपन का जोखिम अधिक हो सकता है। जबकि महिलाओं में, सड़क यातायात के शोर के लंबे समय तक संपर्क में रहने से बांझपन का जोखिम बढ़ सकता है। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में यह दावा किया गया है।

ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में प्रकाशित हुई अध्ययन रिपोर्ट

बांझपन से जुड़ा यह अध्ययन डेनमार्क के डेनिश कैंसर संस्थान के शोधकर्ताओं की टीम ने किया है। शोधकर्ताओं ने कहा कि इन निष्कर्षों की पुष्टि के लिए और अधिक अध्ययनों की आवश्यकता है। लेकिन अध्ययन के परिणाम ध्वनि और वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए रणनीति बनाने में मदद कर सकते हैं, जिनमें से एक स्वास्थ्य लाभ उच्च प्रजनन क्षमता हो सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, बांझपन एक प्रमुख वैश्विक स्वास्थ्य समस्या है, जो प्रजनन आयु के हर छह लोगों में से एक को प्रभावित करती है।संयुक्त राष्ट्र की सार्वजनिक स्वास्थ्य एजेंसी के अनुसार, पुरुषों में बांझपन सबसे आम तौर पर शुक्राणुओं की कम संख्या या गुणवत्ता या वीर्य के निष्कासन में समस्याओं के कारण होता है। जबकि महिलाओं में बांझपन प्रजनन से संबंधित विभिन्न अंगों, जैसे अंडाशय, गर्भाशय या अंत:स्रावी तंत्र को प्रभावित करने वाली असामान्यताओं के कारण हो सकता है।

सुलझ गई डबल मर्डर की गुत्थी

संपत्ति पर कब्जे के लिए जेठ ने की महिला और उसकी बेटी की हत्या

दोपहर संवाददाता । पालघर

महाराष्ट्र के पालघर में तीन दिनों पहले हुई मां-बेटी की हत्या की गुत्थी को पुलिस ने सुलझा लिया है। एक अधिकारी ने कहा कि पालघर में महिला और उसकी ढाई साल की बेटी का शव मिलने के बाद पुलिस ने हत्या के आरोप में तीन लोगों को गिरफ्तार किया है।

गला घोंटकर हत्या

रिपोर्ट के मुताबिक 2 सितंबर को महिला सुष्मिता प्रवीण डावरे (22) और उसकी बेटी के शव गांव में एक नाले में पाए गए थे। पालघर जिले के पुलिस अधीक्षक बालासाहेब पाटिल ने बताया कि महिला की गला घोंटकर हत्या कर दी गई थी और उसके शव को पत्थर से भरी दो प्लास्टिक की बोरियों में बांधकर नदी में फेंक दिया गया था। उन्होंने बताया कि उनकी छोटी बेटी भी पास में ही मृत पाई गई थी। पुलिस ने हत्या के आरोप में संदीप रामजी डावरे (35), सुमन उर्फ साकू साधु करबट (48) और हरि राम गोवारी (32) को गिरफ्तार किया है। उन्होंने कहा, उन पर भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 103 (1) (हत्या) और धारा 238 (सबूत नष्ट करना) के तहत केस दर्ज किया गया है।

संपत्ति विवाद में जेठ ने की हत्या

बता दें कि पीड़ितों के शव बरामद होने के बाद पुलिस ने जांच शुरू कर दी थी। खुफिया जानकारी के आधार पर, जांचकर्ताओं ने पाया कि पीड़िता डावरे के भाई की पांचवीं पत्नी थी। हाल ही में पीड़िता और उसके परिवार के अन्य सदस्यों के बीच संपत्ति को लेकर मतभेद पैदा हो गए थे। उन्होंने कहा, अन्य लोग उसे घर छोड़ने के लिए मजबूर कर रहे थे। जब वो नहीं मानी तो सुष्मिता को खत्म करने के लिए डावरे और करबाट ने एक योजना बनाई। उन्होंने उसकी गला घोंटकर हत्या कर दी और गोवारी की मदद से उसके शव को पत्थर से भरी बोरियों से बांधकर नदी में फेंक दिया। अधिकारी ने कहा कि उन्होंने उसकी ढाई साल की बेटी की भी उसी तरह से हत्या कर दी गई थी।

बदलापुर स्टेशन पर फायरिंग

दोपहर संवाददाता । ठाणे

बदलापुर में स्टेशन पर गोलीबारी की घटना सामने आई है। स्टेशन पर गोली चलने की घटना से सनसनी फैल गई। पुलिस और दूसरी एजेंसी ने घटना की जांच शुरू कर दी है। रेलवे के अधिकारी भी इस मामले की जांच के लिए बदलापुर स्टेशन पहुंचे। बदलापुर स्टेशन पर फायरिंग की घटना के बाद स्टेशन की सुरक्षा को अलर्ट मोड पर कर दिया गया है। जानकारी में सामने आया है कि बदलापुर रेलवे स्टेशन पर भीड़भाड़ वाले समय में गोलीबारी की घटना हुई है। गोलीबारी शाम करीब 6 बजे होम प्लेटफॉर्म पर हुई।

महिला सहित तीन लोगों की पिटाई

रास्ता बंद करने का कर रहे थे विरोध

दोपहर संवाददाता । भिवंडी

भिवंडी तालुका के कोनगांव ग्राम पंचायत कार्यालय स्थित मोटर साईकिल से जा रहे एक व्यक्ति को रास्ता बंद करने का कारण पूछना भरी पद गया। रास्ता बंद करने वाले दो भाइयों ने न सिर्फ उसकी बल्कि झगड़ा छुड़ाने आई उसकी लड़की और भाभी की भी पिटाई कर दी। इस मामले में कोनगांव पुलिस ने दोनो भाइयों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

पूरा मामला समझें

पुलिस के अनुसार, कोनगांव ग्राम पंचायत कार्यालय के पास रहने वाले विनोद मुकादम ने कोनगांव पुलिस में शिकायत दर्ज कराते हुए बताया है कि उनके घर के पास सर्वे नंबर 169 एवं 170 पर गांव के आने जाने वाले लोगों के लिए रास्ता दिया गया है। इसे इसी गांव के राजाराम मुकदाम और किशोर मुकादम दो भाइयों ने बुधवार के रोज लोहे के बैनर की फ्रेम से बंद कर दिया। इसके बाद विनोद मुकादम अपनी मोटर साइकिल से इस रास्ते से गुजर रहे थे तो देखा कि आगे का रास्ता बंद है जिस के बाद उन्होंने किशोर और उसके भाई विष्णु से रास्ता बंद करने का कारण पूछा। इससे दोनों भाई नाराज हो गए और विनोद मुकदम को गाली गलौज करते हुए उन्हें मारना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं इस दौरान झगड़ा छुड़ाने पहुंची उनकी बेटी और भाभी की भी पिटाई कर दी। इस झगड़े में दोनो महिलाओं की दो सोने की चैन भी गुम गई। इस प्रकरण में पुलिस ने किशोर राजाराम मुकदाम और उनके भाई विष्णु राजाराम मुकादम के खिलाफ बीएनएस की धारा 115(2), 118(1), 126(2), 352, 326(4), 3(5) के तहत मामला दर्ज किया है। मामले की जांच पुलिस निरीक्षक उदमले कर रहे है।

पालघर तिहरा हत्याकांड

उत्तर प्रदेश से गिरफ्तार हुआ संदिग्ध आरोपी

दोपहर संवाददाता । पालघर

पालघर जिले में एक परिवार के तीन सदस्यों की हत्या की घटना के सिलसिले में उत्तर प्रदेश से 30 वर्षीय एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। इसके साथ ही, पालघर जिले में मां-बेटी के दोहरे हत्याकांड के मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। वाडा तहसील के नेहरोली में 30 अगस्त को एक घर में मुकुंद बेचरदास राठौड़ (75), उनकी पत्नी कंचन (72) और उनकी बेटी संगीता (52) के शव बरामद किए गए थे।

पालघर पुलिस और एक विशेष कार्य बल का संयुक्त अभियान

संदिग्ध आरोपी आरिफ अनवर अली (30) को पालघर पुलिस और एक विशेष कार्य बल ने एक संयुक्त अभियान में उत्तर प्रदेश के मेजा गांव से गिरफ्तार कर लिया। पूर्व में राठौड़ के पड़ोसी रहे अली ने कथित तौर पर 17 अगस्त को लूटने के मकसद से परिवार की हत्या कर दी थी। पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) बालासाहेब पाटिल ने बताया कि उसने हथौड़े से परिवार के सदस्यों पर हत्या करने का अपराध स्वीकार किया है। राठौड़ के बेटे का जब अपने माता-पिता बहन से काफी समय तक संपर्क नहीं हुआ तो वह घर पहुंचा और पाया कि अपने पिता का शव शौचालय के पास सड़ी हुई हालत में पड़ा था और उनकी मां तथा बहन के शव को कपड़े में लपेटकर एक बड़े ट्रंक के अंदर डाला हुआ था। अली पर भारतीय न्याय संहिता की धारा 103 (1) (हत्या) और 238 (साक्ष्यों को गायब करना) के तहत मामला दर्ज किया गया है और जांच जारी है।

उल्हासनगर में प्लास्टिक विक्रेता पर मनपा की कार्रवाई

प्लास्टिक बेचने वालों पर जुर्माना और प्लास्टिक जब्त

दोपहर संवाददाता । उल्हासनगर

उल्हासनगर मनपा प्रशासन ने प्लास्टिक बैग मुक्त शहर संकल्प को और अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सख्त कदम उठाते हुए दुकानदारों पर कार्रवाई शुरू कर दी है। कैंप-5 के दूध नाका क्षेत्र में प्लास्टिक बैग और अन्य प्लास्टिक वस्तुओं को बेचने व उपयोग करने वालो के खिलाफ दंडमक कार्रवाई की है।

शहर के व्यापारियों में हड़कंप

इस कार्रवाई में कई दुकानों पर प्रतिबंधित प्लास्टिक कैरी बैग, प्लास्टिक के चम्मच और प्लास्टिक के गिलास का इस्तेमाल होता पाया गया। मनपा अधिकारियों ने संबंधित विक्रेताओं से जुर्माना वसूलने के बाद तुरंत सभी प्लास्टिक वस्तुओं को जब्त कर लिया है। मनपा के इस सख्त कदम से शहर के अन्य व्यापारियों में हड़कंप मच गया है और व्यापारियों से प्लास्टिक के उपयोग से बचने के लिए अधिक सतर्क रहने की अपील की जा रही है। उल्हासनगर मनपा प्रशासन ने ऐसी गतिविधियों पर लगातार कार्रवाई जारी रखने का संकेत दिया है, जिससे शहर को प्लास्टिक मुक्त बनाने की दिशा में एक कदम उठाया जाएगा। मनपा ने यह कार्रवाई करते हुए कहा है कि शहर के पर्यावरण और नागरिकों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

कोनगांव पुलिस ने शातिर चोर को किया गिरफ्तार

18 तोला सोना 2 लाख नकदी बरामद

दोपहर संवाददाता । भिवंडी

भिवंडी तालुका के कोनगांव के एक घर में चोरी के मामले की जांच करते हुए, कोनगांव पुलिस ने सीसीटीवी की मदद से मुंबई के मानखुर्द से आरोपी इम्तियाज अब्दुल हमीद शेख 34 को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने आरोपी के पास से 18 तोला सोना और 2 लाख रुपये सहित चोरी का पूरा माल भी बरामद करने में सफलता पाई है।

इम्तियाज शेख ऑन रिकॉर्ड आरोपी, चार पुलिस स्टेशनों में कई मामले दर्ज

कोनगांव पुलिस स्टेशन के पुलिस निरीक्षक सुशील सकपाल ने जानकारी दी है कि 20 अगस्त को कोनगांव गांव के धर्मनिवास स्थित जय साईं सोसायटी की बिल्डिंग से दिनदहाड़े घर का ताला तोड़कर 7 लाख 50 हजार रुपए कीमत का 18 तोला सोना और 2 लाख रुपए का कीमती सामान चोरी हो गया था। वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक नेताराम म्हस्के के मार्गदर्शन में सहायक पुलिस निरीक्षक वैभव चुंबले और उनकी टीम के पुलिस कर्मी अरविंद गोरले, मधुकर घोडसरे, नरेंद्र पाटिल, राहुल वक्से, रमाकांत सालुंखे, अच्युत गायकवाड़ , हेमंत खडसरे, हेमराज पाटिल ने कोनगांव इलाके से सीसीटीवी की जांच शुरू की तो एक संदिग्ध मिला. करीब 80 सीसीटीवी की जांच के बाद पता चला कि संदिग्ध मुंबई के मानखुर्द इलाके में रह रहा था, जिसके बाद पुलिस टीम ने आरोपी इम्तियाज अब्दुल हमीद शेख 34 को गिरफ्तार कर लिया। उसने अपराध कबूल कर लिया और फिर उस आसपास से सभी सामान जब्त कर लिया। पुलिस इंस्पेक्टर सुशील सकपाल ने जानकारी दी है कि इम्तियाज शेख ऑन रिकॉर्ड आरोपी है और उसके खिलाफ मुंबई के चार पुलिस स्टेशनों में कई मामले दर्ज हैं।

चाइना से आया माल डिलीवरी करने के बजाए ट्रांसपोर्टर ने किया गबन

श्री जोगमाया ट्रांसपोर्टर के मालिक पर 6.46 लाख गबन का मामला दर्ज

दोपहर संवाददाता । भिवंडी

भिवंडी तालुका के राहनाल गांव के गोविंद कंपाउंड स्थित ए.एस. के इंटरप्रेजेस कंपनी के गोदाम में चायना से आयात किया गया कीमती कपड़ा लाया गया था जिसे डिलेवरी करने के बजाए श्री जोगमाया ट्रांसपोट के मलिक ने इसे गबन कर लिया। इस मामले में नारपोली पुलिस ने गोदाम में काम करने वाले एक वर्कर की शिकायत पर ट्रांसपोट मलिक पर एफआइआर दर्ज की है।

6 लाख 46 हजार 814 रुपए मूल का 8 हजार 739 मीटर कपड़ा आयात

पुलिस के अनुसार, रहणाल स्थित गोविंद कंपाउंड में ए.एस. के इंटरप्रेजेस कंपनी के गोदाम में काम करने वाले भिवंडी के निवासी आसिफ साजिद सिद्दीकी ने नारपोली पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है जिसमें उन्होंने पुलिस को बताया है कि हमारे गोदाम में चायना से 6 लाख 46 हजार 814 रुपए मूल का 8 हजार 739 मीटर कपड़ा आयात किया गया था। इसे मुंबई कुर्ला में बायमा फैब्रिक, साइन में एशियन इंटरप्राइजेज, खोतवाड़ी के चामुंडा फैब्रिक और गोदावरी के क्रिएशन सहित मुंबई वडाला में जिलानी दुपट्टा और गुलाम भाई जैसे विभिन्न पार्टी को डिलीवरी करने के लिए मनिसूरत कंपाउंड के श्री जोगमाया ट्रांसपोर्ट के मालिक करणचंद यादव उर्फ चिनक पूरा को दिया गया था। इसने हमारे गोदाम से टाटा टेंपो नंबर एमएच. 04. केएफ. 8164 और एक दूसरे टेंपो जिसका नंबर अज्ञात है। दोनों टेंपो में भर कर डिलेवरी के लिए दोनों गाड़ियां निकली थी लेकिन दोनों ही गाड़ियां उक्त कंपनियों के पास नहीं पहुंची। श्री जोगमाया ट्रांसपोर्ट ने डिलेवरी न करते हुए पूरा माल गबन कर लिया। पुलिस ने श्री जोगमाया ट्रांसपोर्ट के मालिक कारणचंद यादव उर्फ चिनक पूरा के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जिस के जांच अधिकारी पुलिस निरीक्षक विजय मोरे है।

सिंहगढ़ कॉलेज के 11 असिस्टेंट प्रोफेसरों को राहत

दोपहर संवाददाता । मुंबई

बॉम्बे हाई कोर्ट से पुणे के सिंहगढ़ कॉलेज एवं इंस्टिट्यूट के 11 असिस्टेंट प्रोफेसरों को बड़ी राहत मिली है। अदालत ने कॉलेज प्रबंधन को निर्देश दिया कि वह उसके (प्रबंधन) द्वारा प्रस्तुत चार्ट के अनुसार आज से तीन सप्ताह की अवधि के भीतर याचिकाकर्ताओं (असिस्टेंट प्रोफेसर) के बकाया पेमेंट की राशि का भुगतान करे और उसकी रिपोर्ट 23 सितंबर को अगली सुनवाई के दौरान प्रस्तुत करे। न्यायमूर्ति नितिन जामदार और न्यायमूर्ति एम.एम.सथाये की पीठ के समक्ष 11 प्रोफेसर की ओर से वकील वैभव उगले की दायर याचिकाओं पर सुनवाई हुई। याचिका में याचिकाकर्ताओं के वेतन का भुगतान अक्टूबर 2016 से 18 फीसदी ब्याज के साथ करने और प्रत्येक महीने की 10 तारीख को वेतन का भुगतान का कॉलेज प्रबंधन को निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। कॉलेज प्रबंधन के वकील ने दलील दी कि वेतन भुगतान से संबंधित संपूर्ण विवाद को याचिकाकर्ताओं द्वारा शिकायत समिति के समक्ष उठाया जाना चाहिए और जहां तक भुगतान की जाने वाली राशि का सवाल है। प्रबंधन नवंबर 2024 तक राशि का भुगतान करेगा। इस पर पीठ ने कहा कि प्रबंधन को 2 से 8 लाख रुपए प्रति व्यक्ति को देना है। याचिकाएं दिसंबर 2021 और सितंबर 2022 में दायर की गई हैं। हमारा मानना है कि अब प्रबंधन को दो महीने की अवधि देना पूरी तरह से अनुचित है। पीठ ने कॉलेज प्रबंधन को कड़े शब्दों में कहा कि केवल यह कहना कि वित्तीय कठिनाइयां हैं, प्रबंधन अपने दायित्व से मुक्त नहीं हो सकता।

दो अज्ञात बाइक सवार ने ट्रक चालक को लूटा

दोपहर संवाददाता । भिवंडी

भिवंडी के नाशिक मुंबई हाइवे पर मानकोली ब्रिज स्थित दो अज्ञात बाइक सवार लुटेरों ने दिन दहाड़े एक ट्रक चालक से लूटपाट कर भाग निकले। नारपोली पुलिस ने मोटर साइकिल नंबर सहित दो अज्ञात आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी है। मुंबई-नाशिक हाइवे पर आए दिन छिनौती तथा लूट की घटनाएं होती रहती है। इस हाइवे पर बाइक सवार बड़ी आसानी से यात्रियों और ड्राइवरों को लूट कर फरार हो जाते हैं। इसी तरह बुधवार की दोपहर ढाई बजे के करीब ट्रक चालक कैश जुबैर शेख निवासी कुरैश नगर कुर्ला मुंबई अपनी ट्रक नंबर एमएच. 03. डीवी. 7734 से मुंबई जा रहा था। इसी दौरान नाशिक मुंबई हाइवे स्थित मानकोली ब्रीच के पास जैसे ही वह पहुंचे, उसी समय भिवंडी की तरफ से आने वाले दो बाइक सवार जिनकी गाड़ी का नंबर एमएच. 41. बीजी. 5050 था ओवर टेक कर ट्रक के आगे अपनी बाइक खड़ी कर दी और ट्रक में बैठे क्लीनर को गाली गलौज करते हुए उसे मारना शुरू कर दिया।

गणेश भक्त गणेश मूर्तियों के विसर्जन के लिए कृत्रिम तालाबों का उपयोग करें : आयुक्त अजय वैद्य

दोपहर संवाददाता । भिवंडी

राज्य सरकार ने गणेशोत्सव को पर्यावरण के अनुकूल तरीके से मनाने का निर्देश दिया है। मूर्तियों को विसर्जित करने के लिए पर्यावरण-अनुकूल दृश्य, पर्यावरण-अनुकूल मूर्तियों का उपयोग किया जाना चाहिए और कृत्रिम तालाबों का उपयोग किया जाना चाहिए। तदनुसार, गणेश मार्ति को प्राकृतिक तालाबों, नदी के पानी में विसर्जित नहीं किया जाना चाहिए।

मनपा जनसंपर्क अधिकारी मिलिंद पलसुले द्वारा जारी प्रेस विज्ञापन के अनुसार सभी को पर्यावरण संरक्षण के लिए गणेशोत्सव मनाते समय घर में बनी गणेश प्रतिमा के विसर्जन के लिए कम से कम कृत्रिम तालाब का उपयोग किया जाना चाहिए। ऐसे निर्देश राज्य सरकार के हैं. तदनुसार, भिवंडी शहर में श्री गणेश मूर्तियों को विसर्जित करने के लिए अस्थायी रूप में कृत्रिम गणेश मूर्तियां तैयार की गई हैं। भिवंडी शहर प्रभाग समिति नं. 02 कल्याण रोड के अंतर्गत, तेमघर पाड़ा, मंगलमूर्ति कॉम्प्लेक्स के सामने, रिद्धिसिद्धि कॉम्प्लेक्स के बगल में, प्रभाग समिति नंबर 03 पुराना कार्यालय नगर निगम स्कूल नंबर 23,59,61 और 55 के परिसर में प्रभाग समिति क्रमांक 04 बालू पाटिल चौक, नारपोली जबकि वार्ड समिति क्रमांक 5 में छत्रपति शिवाजी महाराज चौक, अपना मेडिकल के बाहर खुली जगह पर घर में बनी गणेश प्रतिमा को इस स्थान पर विसर्जित करें और पर्यावरण अनुकूल गणेशोत्सव मनाएं। मनपा आयुक्त अजय वैद्य ने सभी गणेश भक्तों से मनपा प्रशासन को सहयोग करने के लिए अपील किया है।

ठाणे के 17 शिक्षक हुए आदर्श पुरस्कार से सम्मानित

दोपहर संवाददाता । ठाणे

मनपा की ओर से शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मनपा क्षेत्र के अंतर्गत कुल 17 शिक्षकों को आदर्श शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिसमें मनपा के 13 और 4 निजी स्कूल के शिक्षक का समावेश है। मनपा अतिरिक्त आयुक्त 2 प्रशांत रोड़े व उपायुक्त सचिन पवार के हाथों से सम्मानित किया गया। अतिरिक्त आयुक्त रोड़े ने कहा कि शिक्षकों का योगदान उल्लेखनीय है।

महात्मा फूले शिक्षण संस्था में शिक्षक दिवस समारोह संपन्न

महात्मा फुले शिक्षण संस्था द्वारा संचालित छत्रपति शिवाजी विद्यालय एवम् राजे शिवाजी प्राथमिक विभाग के प्रांगण में 5 सितंबर 2024 के दिन दोपहर 12 से 2 के दरमियान शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन किया गया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन इनका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। सर्वप्रथम डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की प्रतिमा का पूजन व दीप प्रज्वलन करके कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस अवसर पर विद्यार्थियों के द्वारा अनेक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। शिक्षकों के सम्मान में अनेक विद्यार्थियों ने कविताएं, भाषण व नृत्य प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर महात्मा फुले शिक्षण संस्था के मुख्य अतिथि के तौर पर सचिव दिलीप शिंदे, कोषाध्यक्ष प्रमोद माने उपस्थित थे ।

गड्ढा युक्त सड़कों पर हो रहा है भगवान गणेश की मूर्तियों का आगमन

गणेश भक्तों में भारी आक्रोश व्याप्त

दोपहर संवाददाता । भिवंडी

भिवंडी शहर के कई गणेश मंडल एवं सार्वजनिक गणेशोत्सव महामंडल ने मनपा प्रशासन से सार्वजनिक गणेशोत्सव से पहले भिवंडी शहर की खराब सड़कों एवं गड्ढायुक्त मुख्य सड़कों की मरम्मत करने तथा मनपा क्षेत्र में विशेष सफाई अभियान चलाने का अनुरोध किया था, लेकिन हमेशा की तरह मनपा प्रशासन ने इस पुण्य पवित्र त्योहार की भी अनदेखी कर दी। भिवंडी शहर में ट्रैफिक जाम और गड्ढों को लेकर मनपा प्रशासन के इस कुप्रबंध पर गणेशोत्सव मंडल के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने कड़ी नाराजगी जताई है। बारिश के कारण सड़कें बह गई हैं, अब गड्ढों में सड़कें दिखाई पड़ने लगी हैं।

पीडब्लूडी विभाग के अधिकारियों द्वारा की गई अनदेखी

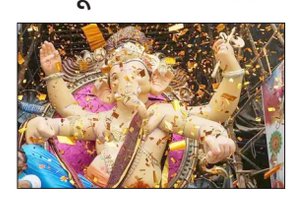

पुलिस प्रशासन ने मनपा आयुक्त और प्रशासन को पत्र दिया है कि गणेशोत्सव के मद्देनजर मनपा प्रशासन तुरंत सड़कों की मरम्मत कराए और सफाई अभियान चलाए। सभी विभाग के आला अधिकारियों की बैठक भी हो चुकी है, लेकिन भिवंडी मनपा प्रशासन के पी डब्लू डी विभाग के अधिकारियों द्वारा इसकी पूरी तरह से अनदेखी की गयी। कापआली गणेशोत्सव मंडल, नामदेव शिम्पी समाज गणेशोत्सव मंडल, सुभाष नगर गणेशोत्सव मंडल और विभिन्न गणेशोत्सव मंडलों की ओर से मुंबई और भिवंडी से अपनी गणेश प्रतिमाओं की शोभा यात्रा निकालकर रात में प्रतिमा को मंडप में विराजमान किया गया। सभी मंडलों ने इस बात पर अफसोस जताया कि गड्ढों से गणेश प्रतिमाएं लाने में उन्हें काफी परेशानी उठानी पड़ी।

रास्तों की दुरुस्ती और स्वच्छता अभियान की मांग

सार्वजनिक गणेशोत्सव मंडल के अध्यक्ष मदन भोई, पूर्व अध्यक्ष शरद भसाले, कार्यकारी अध्यक्ष गणेश मोरे सहित विभिन्न गणेश मंडलों की ओर से मांग की गई है कि मनपा प्रशासन गणेश प्रतिमा आगमन और जुलूस मार्ग पर क्षतिग्रस्त सड़कों का तुरंत निरीक्षण और मरम्मत कर कार्य शुरू कराए और युद्धस्तर पर गड्ढे भरने का अभियान अविलंब शुरू करे,साथ ही पूरे शहर में साफ सफाई अभियान शुरू करे ताकि लोग पवित्रता से त्योहार मना सकें।

दो बजे दोपहर
पत्रकारिता पावर नहीं रिस्पांसिबिलिटी है

अनमोल विचार मेरा पसंदीदा मंदिर विनम्र हृदय है : फिलिप जेम्स बेली

बैंक कर्मी ने अटल सेतु से कूदकर की आत्महत्या

दोपहर संवाददाता । मुंबई

महाराष्ट्र के मुंबई में 35 वर्षीय एक बैंक कर्मी ने ट्रांस-हार्बर अटल सेतु से कूदकर कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। यह पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई है। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। मिली जानकारी के अनुसार, मृतक की पहचान पुणे निवासी एलेक्स रेगी के रूप में हुई है। वह एक राष्ट्रीयकृत बैंक में काम करते थे। उसने बताया कि रेगी ने सोमवार को पुल पर अपनी कार रोकी और समुद्र में छलांग लगा दी।

घटना सीसीटीवी कैमरे में हुई रिकॉर्ड

न्हावा-शेवा के एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई। बाद में रेगी का शव बरामद किया गया। अधिकारी ने बताया कि रेगी के परिजनों ने पुलिस को बताया कि वह काम के दबाव में थे, लेकिन कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि मामले की जांच जारी है।

गणेशोत्सव के मौके पर मेट्रो सेवाएं रात 12 बजे तक रहेंगी जारी

मुंबई। महा मुंबई मेट्रो ऑपरेशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एम एम एम ओ सीएल) ने गणेशोत्सव के दौरान मेट्रो ट्रेन सेवा के अतिरिक्त दौर चलाने का यह निर्णय लिया है। एमएमआरडीए के महानगर आयुक्त और महा मुंबई मेट्रो के अध्यक्ष डॉ. बीएचपीआरईएस के संजय मुखर्जी ने इसकी घोषणा की. उन्होंने त्योहारी सीजन के दौरान बढ़ती यात्रा मांग को पूरा करने के लिए परिवहन सेवाओं को बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया। गणेशोत्सव के दौरान देर रात यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या में बढ़ोतरी हुई. इसे ध्यान में रखते हुए, 11 सितंबर से 17 सितंबर, 2024 तक अंधेरी (पश्चिम) और गुंदवली दोनों टर्मिनलों से आखिरी मेट्रो ट्रेन रात 11 बजे के बजाय 11.30 बजे प्रस्थान करेगी। इस विस्तारित सेवा का उद्देश्य देर रात तक गणेशोत्सव में भाग लेने वाले भक्तों को उनके घर तक पहुंचने में सक्षम बनाना है।

ऐसा रहेगा शेड्यूल

- अंधेरी (पश्चिम) और गुंदवली टर्मिनल से आखिरी ट्रेन के समय में 30 मिनट की बढ़ोतरी की जाएगी।
- अतिरिक्त मेट्रो ट्रेनें दोनों टर्मिनलों से रात 11.15 और 11.30 बजे रवाना होंगी।
- गुंदवली से दहिसर (पूर्व) और अंधेरी (पश्चिम) से दहिसर (पूर्व) स्टेशनों के बीच चार यात्राएं शुरू की जाएंगी।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव

उद्धव ठाकरे ने कसी कमर

मुंबई की 22 सीटों पर इलेक्शन लड़ेगी उद्धव ठाकरे की शिवसेना

नितिन तोरस्कर । मुंबई

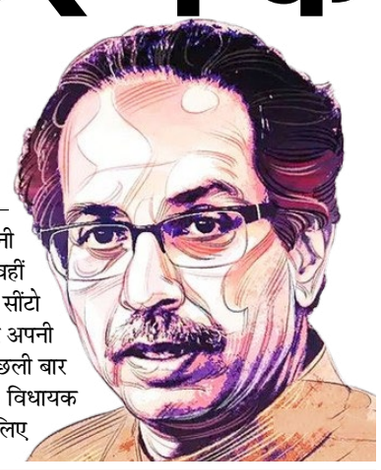

महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव में उद्धव ठाकरे मुंबई को लेकर अपनी कमर कस ली है, जिस मुंबई में ठाकरे के तीन सांसद चुनकर आए वहीं ठाकरे अब सबसे ज्यादा विधायक चुनकर लाने के लिए तैयार हैं. अभी सींटो का बंटवारा हुआ नहीं है, फिर भी उद्धव ठाकरे ने मुंबई की 22 सीटों पर अपनी तैयारी शुरू कर दी है. मुंबई मे कुल 36 विधानसभा सीट है जिसमें पिछली बार उद्धव ठाकरे के करीब 14 सीटे मुंबई मे जीते थे और कुल मिलाकर 56 विधायक जीत कर आए थे, मुंबई में मुस्लिम और दलितों की संख्या ज्यादा है इसलिए कांग्रेस भी ज्याद सीटे लेने पर अड़ी हुई है।

उद्धव ठाकरे की मुंबई को लिए क्या है प्लॅनिंग ?

मुंबई में 36 सीटे हैं। 2019 ठाकरे की पार्टी ने मुंबई की 14 सीटीं जीती थीं। इस बार एनसीपी और कांग्रेस के साथ कुछ सीटों का आदान-प्रदान किया जाएगा। इस पर महाविकास अघाड़ी की बैठकों में शीर्ष स्तर पर निर्णय लिया जाएगा। मुंबई में जीती गई सीटें और ऐसी सीटें जहां एक से अधिक उम्मीदवार रुचि रखते हैं और जहां हाल के लोकसभा चुनावों में विधानसभा क्षेत्र में ठाकरे के उम्मीदवार को अधिक बढ़त मिली है, उस पर उद्धव ठाकरे जोर दे रहे हैं।

मुंबई पर इसलिए है उद्धव ठाकरे का फोकस

मुंबई की कुछ सीटों पर जहां ठाकरे मजबूत हैं वहां चुनाव लड़ने की योजना है तो साथ ही नगर निगम चुनावों को ध्यान में रखते हुए शिवसेना ठाकरे समूह उन सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहा है। 2019 के चुनाव में मुंबई से कांग्रेस के केवल चार विधायक जीते थे, जबकि NCP ने एक सीट जीती थी। 2024 के लोकसभा चुनाव में भी ठाकरे ने अपनी चार में से तीन सीटें जीतीं है। इसलिए आगामी विधानसभा चुनाव में और अधिक सफलता हासिल करने के लिए उद्धव ठाकरे का मुंबई पर विशेष फोकस रहेगा।

संभावित प्रत्याशियों की लिस्ट

1) विलास पोतनीस / सुदेश पाटेकर / संजना घाडी	मागाठणे
2) विनोद घोसालकर	दहिसर
3) सुनिल प्रभू	दिंडोशी
4) अमोल किर्तीकर/ बाळा नर/ शैलेश परब	जोगेश्वरी
5) ऋतुजा लटके	अंधेरी पश्चिम
6) राजू पेडणेकर/ राजूल पटेल	वर्सोवा
7) वरूण सरदेसाई	वांद्रे पुर्व
8) विशाखा राऊत/ महेश सावंत	दादार- माहिम
9) अजय चौधरी/ सुधीर सालवी	शिवडी
10) आदित्य ठाकरे	वरली
11) किशोरी पेडणेकर/ जामसुतकर/ रहाटे	भायखळा
12) ईश्वर तायडे	चांदीवली
13) अनिल पाटणकर/ प्रकाश फार्तेपेकर	चेबुर
14) रमेश कोरगांवकर	भांडुप
15) सुनिल राऊत	विक्रोली
16) संजय पोतनीस	कलिना
17) विठ्ठल लोकरे / प्रमोद शिंदे	अणुशक्तीनगर
18) सुरेश पाटील	धाटकोपर
19) प्रविणा मोरजकर	कुर्ला
20) निरव बारोट	चारकोप
21) समीर देसाई	गोरेगाव
22) श्रद्धा जाधव	वडाला

एमएमआरडीए कार्यकारी समिति की 282वीं बैठक

विभिन्न परियोजनाओं के निर्माण के लिए ठेकेदारों की नियुक्ति को दी गई मंजूरी

दीपक पवार । मुंबई

यातायात की भीड़ को कम करने और कनेक्टिविटी में सुधार करने के लिए, मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण (एमएमआरडीए) ने मुख्य सचिव की अध्यक्षता में कार्यकारी समिति की 282 वीं बैठक में मुंबई और ठाणे में प्रमुख सड़क विकास परियोजनाओं के लिए ठेकेदारों की नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। इस परियोजना के तहत 50 किलोमीटर से अधिक सड़कों का निर्माण और चौड़ीकरण किया जाएगा, जिसमें क्षेत्र की महत्वपूर्ण परिवहन जरूरतों को पूरा करने पर जोर दिया जाएगा। इन परियोजनाओं के महत्व पर टिप्पणी करते हुए, एमएमआरडीए मेट्रोपॉलिटन कमिश्नर डॉ. आईएएस संजय मुखर्जी ने कहा कि ये बुनियादी ढांचा परियोजनाएं मुंबई और ठाणे में यातायात की स्थिति को सुधारने और विकास प्रक्रिया को तेज करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। हम एक सड़क नेटवर्क बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जो भविष्य की जरूरतों को पूरा करता है।

मैंग्रोव को काटने की अनुमति

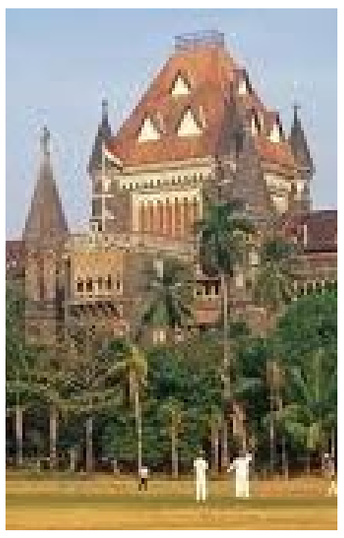

नयी रेल लाइन के निर्माण से उत्सर्जन में कमी आएगी: कोर्ट

दोपहर संवाददाता । मुंबई

बम्बई उच्च न्यायालय ने कहा है कि पश्चिम रेलवे (डब्ल्यूआर) के बोरीवली और विरार स्टेशनों के बीच पांचवीं और छठी लाइन के निर्माण से यातायात की भीड़ कम होगी, उत्सर्जन में कमी आएगी और ईंधन की बचत होगी। इसके साथ ही अदालत ने इस परियोजना के लिए मैंग्रोव को काटने की अनुमति प्रदान कर दी है। मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय और न्यायमूर्ति अमित बोरकर की खंडपीठ ने पश्चिम रेलवे को मुंबई उपनगरीय रेल मार्ग पर नयी लाइन बिछाने के लिए आवश्यक भूमि पर 2,612 मैंग्रोव काटने की अनुमति दी।

क्या है आदेश में ?

तीस अगस्त को जारी यह आदेश बृहस्पतिवार को उपलब्ध हो सका। इस आदेश में कहा गया है कि यह परियोजना पूरी तरह से जनहित में है और इससे महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय लाभ भी हैं। उच्च न्यायालय ने कहा कि पर्यावरणीय परिणामों की तुलना में व्यापक जनहित का पलड़ा भारी है, क्योंकि संबंधित निर्माण से मौजूदा लाइन पर भीड़भाड़ कम होगी। अदालत ने कहा, ''रेलवे प्रणाली जन परिवहन का एक पर्यावरण-अनुकूल तरीका है और दुनिया में सबसे किफायती परिवहन संसाधनों में से एक है। इन लाइन के निर्माण से उत्सर्जन में कमी आएगी, यातायात की भीड़भाड़ कम होगी और कीमती ईंधन की बचत होगी।'' खंडपीठ ने कहा कि यह परियोजना बिल्कुल आवश्यक थी और इसका कोई व्यवहार्य विकल्प नहीं था, क्योंकि निर्माण स्थल मौजूदा पटरियों से सटा हुआ है। इसने कहा, ''संरेखण (अलाइनमेंट) को तकनीकी, आर्थिक और कार्यात्मक दृष्टिकोण से सबसे उपयुक्त माना गया है।'' खंडपीठ ने पारिस्थितिकीय नुकसान की भरपाई के लिए रेलवे अधिकारियों को 7,823 मैंग्रोव फिर से लगाने का निर्देश दिया।

मैंग्रोव को हटाने के लिए उच्च न्यायालय की अनुमति जरुरी

एक पुराने फैसले के अनुसार, मुंबई क्षेत्र में मैंग्रोव को हटाने के लिए उच्च न्यायालय की अनुमति की आवश्यकता होती है। पश्चिम रेलवे ने मैंग्रोव को काटने की अनुमति के लिए याचिका दायर की थी। इसमें कहा गया है कि पांचवीं और छठी लाइन के निर्माण से अतिरिक्त सेवाओं की मांग पूरी होगी। मुंबई शहरी परिवहन परियोजना (एमयूटीपी) के चरण तीन-ए के तहत बोरीवली और विरार के बीच पांचवीं और छठी रेलवे लाइन का निर्माण 2,184 करोड़ रुपये की लागत से किया जा रहा है। छब्बीस किलोमीटर लंबी लाइन से पश्चिमी उपनगरों से आगे रेलगाड़ियों की आवृत्ति बढ़ने की उम्मीद है। वर्तमान में मुंबई सेंट्रल और बोरीवली के बीच पांच लाइन हैं।

जीएसटी की महिला अधिकारी से ठगी

मैट्रिमोनियल वेबसाइट पर मिले व्यक्ति पर FIR दर्ज

दोपहर संवाददाता । मुंबई

भायखला पुलिस ने एक अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया है। जिसने एक 32 वर्षीय महिला से करीब 50 हजार रुपए की ठगी की है, जो जीएसटी विभाग में टैक्स असिस्टेंट के तौर पर काम करती है। पुलिस ने बताया कि दोनों की मुलाकात एक माह पहले मैट्रिमोनियल वेबसाइट पर हुई थी। पुलिस आरोपी के उस बैंक खाते को खंगाल रही है जहां पैसे ट्रांसफर हुए थे।

यूं हुई शिकार

पुलिस में दर्ज पीड़िता की शिकायत के मुताबिक, 10 अगस्त को उसने एक व्यक्ति से संपर्क किया था, जिसने खुद को सतारा का निवासी बताया था। उसने बताया कि वह अपनी मां के साथ पुणे में रहता है, जहां वह एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करता है। इसके बाद दोनों के बीच कॉल और वॉट्सऐप के जरिए बातचीत होने लगी। 14 अगस्त को जालसाज ने पीड़िता को फोन किया और आर्थिक मदद मांगी, उसने कहा कि उसकी मां अस्पताल में भर्ती है। इसके बाद में उसने महिला से कहा कि वह अस्पताल में भर्ती है और उसने अपने पट्टी लगे पैर की कुछ तस्वीर भी व्हाट्सऐप पर शेयर की, पुलिस ने बताया कि इस बहाने वह शिकायतकर्ता को ठगता रहा। 31 अगस्त को महिला पुणे के उस अस्पताल में गई, जहां ठग ने दावा किया था कि वह अस्पताल में भर्ती है। उसे यह जानकर झटका लगा कि ठग वहां कभी भर्ती ही नहीं हुआ है। हैरान होकर वह लगातार ठग को फोन करती रही, लेकिन फोन बंद था। जब महिला को एहसास हुआ कि उसके साथ धोखा हुआ है, तो उसने पुलिस से संपर्क किया और पुलिस में मामला दर्ज करवाया है।

मुंबई झोपड़पट्टी सुधार मंडल

(महाराष्ट्र हाउसिंग एंड एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी की एक क्षेत्रीय इकाई)

म्हाडा MHADA

टेली.नं.-022-66405250, ई-मेल : eee. east1@gmail.com

ई-निविदा सूचना

कार्यकारी अभियंता (पूर्व) डिवीजन, मुंबई झोपड़पट्टी सुधार मंडल, (म्हाडा की इकाई), कमरा नं.536,4थी मंजिल, गृह निर्माण भवन, बांद्रा (पूर्व), मुंबई 400051 फोन नंबर (022) 66405251 द्वारा किसी भी सरकारी/ अर्ध सरकारी संगठन अथवा ठेकेदारों की संबंधित समुचित श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑनलाइन ई-निविदा प्रणाली के जरिए बी 1 प्रपत्र (प्रतिशत) में 1 कार्यों के लिए खुली/नियमित ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। विस्तृत निविदा सूचना और निविदा दस्तावेज महाराष्ट्र सरकार के पोर्टल http:/mahatenders.gov. in पर उपलब्ध है और यहां से डाउनलोड किए जा सकते हैं। बोली दस्तावेज वेबसाइट पर लोड किए जा सकते है। निविदा दस्तावेज बिक्री की आरंभिक तिथि 06/09/2024 को सुबह 10.30 बजे है तथा निविदा दस्तावेज बिक्री की अंतिम तिथि 13/09/2024 को शाम 6.15 बजे तक है। शुद्धिपत्र/संशोधन, यदि कोई होगा, तो उसे केवल https://mahatenders.gov.in वेबसाइट पर ही प्रकाशित किया जाएगा। सक्षम प्राधिकारी के पास बिना कोई कारण दर्शाए किसी भी अथवा सभी निविदाओं को निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित है।शर्तयुक्त प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया जाएगा।

Follow us: @mhadaofficial
सीपीआरओ/ए/661

सही/-
कार्यकारी अभियंता (पूर्व)
एम. एस. आई. बी बोर्ड, मुंबई

म्हाडा-राष्ट्र का अग्रणी गृहनिर्माण प्राधिकरण

लिफ्ट गिरने से 2 मजदूरों की मौत

मुंबई। विक्रोली के टैगोर नगर में निर्माणाधीन इमारत की लिफ्ट अचानक नीचे गिर जाने से दो मजदूरों की मौत हो गई। पार्कसाईट पुलिस स्टेशन की टीम ने दोनों मजदूरों के शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए हैं। पुलिस ने इस मामले में लेबर कांट्रेक्टर अरविंद हरजी रामजियानी के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

पुलिस के अनुसार ओडिशा के मूल निवासी रत्नाकर फकीरा मुनि (उम्र 31) और उमा राजेंद्र सामल (उम्र 21) छह महीने से टैगोरनगर में निर्माणाधीन इमारत में काम कर रहे थे। बीती रात दोनों मजदूर निर्माणाधीन इमारत के चौथी मंजिल पर जा रहे थे। अचानक लिफ्ट चौथे मजले से नीचे गिर गई। इसकी जानकारी मिलते ही साईट पर अन्य मजदूर तत्काल मौके पर पहुंचे तो दोनों को बेहोश पाया। इसके बाद दोनों को तत्काल राजावाड़ी अस्पताल में पहुंचाया गया लेकिन डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। गुरुवार को पार्कसाईट पुलिस ने इस मामले में लेबर कांट्रैक्टर के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

बृहन्मुंबई महानगरपालिका

के. ई. एम. अस्पताल, परेल

केईएमएच/2352/एईएमई/ दिनांकः 05/09/2024

ई-निविदा सूचना

विभाग	:-	विभाग केईएम अस्पताल
बोली आमंत्रण संख्या	:-	महा बोली नं. 2024_एमसीजीजी_1080811
विषय	:-	केईएम अस्पताल के जिमखाना में सुविधा के लिए सजावट का काम
बोली की बिक्री	:-	दिनांक 06/09/24 को शाम 4 बजे से दिनांक 13/09/24 को शाम 4 बजे तक
वेबसाइट	:-	https://mahatenders.gov.in
अ) संपर्क अधिकारी	:-	सहायक अभियंता (एमएंडई) केईएम
ब) नाम	:-	श्रीमती.मनीषा जाधव/श्री. प्रफुल खुपटे
स) टेलीफोन	:-	02224107768/7799
द) ईमेल आईडी	:-	ae02me.kem@mcgm.gov.in

पीआरओ/1191/विज्ञा./2024-25

हस्ता./
डीन(केईएमएच)

समय पर निदान, बचाएं प्राण

बृहन्मुंबई महानगरपालिका

ई-निविदा सूचना

निविदा दस्तावेज क्र.	2024_एमसीजीएम_1080613_1
संगठन का नाम	बृहन्मुंबई महानगरपालिका
विषय	महानगरपालिका कार्यशाला परिसर के सौंदर्यीकरण के लिए विभिन्न प्रकार के उत्थान कार्य।
निविदा की जांच शुल्क	रु.3300(+18%सीजीएसटी)
निविदा की लागत(अनुमानित लागत)	आइटम दर निविदा
बोली जांच जमा/ईएमडी	रु.,20,000/-
निविदा जारी करने की तिथि	06/09/2024 को सुबह 11.0 बजे
निविदा की बिक्री और बोली की प्राप्ति की अंतिम तिथि/ समय सुरक्षा जमा	12/09/2024 को शाम 04.00 बजे तक
पकैट ए, बी, और सी जमा करना (ऑनलाइन)	12/09/2024 को शाम 04.00 बजे तक
बोली पूर्व बैठक	लागू नहीं
पैकेट ए खोलना (बोली खोलना)	13/09/2024 को शाम 04.00 बजे के बाद
संपर्क के लिए पता	कार्यालयः ई. ई. मैक.(दक्षिण), बीएमसी म्युनिसिपल वर्कशॉप, आर. एस.निमकर मार्ग,भायखला,मुंबई :400008
निविदा खोलने का स्थान	कार्यालय ई. ई. मैक.(दक्षिण) ऑनलाइन
संपर्क व्यक्ति	
ए) नाम	श्री एस. एस.पाटिल
बी) टेलीफोन (कार्यालय)	022-23083051/52/53/54
सी)ईमेलः	eemechsouth.me@mcgm.gov.in
वेबसाइट	http://portal.mcgm.gov.in/tenders https://mahatenders.gov.in.

यह निविदा दस्तावेज हस्तांतरणीय नहीं है।
एमसीजीएम किसी भी आवेदन को स्वीकार करने या उपरोक्त विषय के लिए प्राप्त किसी भी या सभी आवेदनों को बिना कोई कारण बताए अस्वीकार करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।

पीआरओ/1181/विज्ञा./2024-25

हस्ता./
कार्यकारी अभियंता मैकेनिकल (दक्षिण)

समय पर निदान, बचाएं प्राण

संपादकीय

जल्दीबाजी का कानून

हाल ही में कोलकाता में एक युवा महिला डॉक्टर के साथ दुराचार और हत्या की घटना ने पूरे देश को उद्वेलित किया है। इसको लेकर पश्चिम बंगाल व देश के अन्य भागों में चिकित्सा बिरादरी के लोग व छात्र-छात्राएं आंदोलनरत रहे हैं। निश्चित ही यह दुर्भाग्यपूर्ण व दुखद घटना थी। लेकिन इस मुद्दे को लेकर जिस तरह की राजनीति होती रही है, वह और भी दुर्भाग्यपूर्ण है। विडंबना है कि एक अमानवीय घटना को राजनीतिक अस्त्र बनाने और उसका प्रतिकार करने का माध्यम बना दिया गया। इसी कड़ी में आनन-फानन में बुलाए गए पश्चिम बंगाल विधानसभा के सत्र में जल्दीबाजी में बलात्कार विरोधी विधेयक 'अपराजिता' पारित कर दिया गया। यदि किसी महिला के साथ बलात्कार के बाद मृत्यु हो जाती है या उसे छोड़ भी दिया जाता है, तो विधेयक बलात्कारी के लिये मृत्युदंड का प्रावधान करता है। कहा जा रहा है कि दुराचार के बाद युवा डॉक्टर की निर्मम हत्या के बाद पश्चिम बंगाल में जो आक्रोश आम लोगों में उपजा है उसको दबाने की यह एक राजनीतिक निहितार्थ वाली प्रतिक्रिया है। दरअसल, यह विधेयक जनता के व्यापक विरोध के बाद सामने आया है। जनता ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली सरकार से न्याय और जवाबदेही की मांग करती रही है। वहीं राज्य सरकार का दावा है कि विधेयक का उद्देश्य महिलाओं की सुरक्षा को लेकर शासन की प्रतिबद्धता के प्रति आश्वस्त करना है। हालांकि, ममता सरकार द्वारा आनन-फानन में लाए गए विधेयक ने इस बात को लेकर बहस छेड़ दी है कि यह कदम राज्यव्यापी असंतोष को शांत करने के लिये महज राजनीति से प्रेरित प्रतिक्रिया है। दरअसल, राज्य में तृणमूल कांग्रेस के नेता जनता के भारी विरोध का सामना कर रहे हैं। हाल ही में आंदोलनकारी प्रशिक्षु डॉक्टरों पर भीड़ के हमले और प्रदर्शन के दौरान पुलिस के दमन से लोगों में भारी गुस्सा है। यही नहीं, टीएमसी के कई नेताओं की असंवेदनशील टिप्पणियों ने भी आंदोलनकारियों के आक्रोश को और बढ़ाया है। दरअसल, राज्य के लोगों खासकर महिलाओं में इस बात को लेकर भी गुस्सा है कि जिस राज्य में एक महिला मुख्यमंत्री हो, वहां एक युवा महिला डॉक्टर के साथ दुराचार व हत्या के मामले में राज्य सरकार ने ईमानदार प्रतिक्रिया नहीं दी। टीएमसी के कई नेताओं द्वारा की गई अनर्गल बयानबाजी ने भी आग में घी डालने का काम किया। दरअसल, राज्य सरकार ने इस कांड में किरकिरी होते देख मामले को दबाने का प्रयास किया। पीड़िता के परिवार ने भी उनके साथ किये गए व्यवहार को लेकर तीखा प्रतिवाद किया था। फिर प्राथमिकी दर्ज करने में देरी व मेडिकल कालेज के परिसर में आंदोलनरत छात्रों पर एक भीड़ के हमले ने यह संदेश दिया कि मामले को दबाने की कोशिश हो रही है। इस तरह के कृत्यों से राज्य में घटना का विरोध और तेज होता चला गया। निस्संदेह, इस मुद्दे पर विपक्षी दलों द्वारा जमकर राजनीति की गई, लेकिन जिस तरीके से राज्य सरकार व प्रशासन ने मामले में प्रतिक्रिया दी, उसने लोगों के गुस्से को बढ़ाया ही है। एक पहलू यह भी है कि नया विधेयक केंद्र की भारतीय न्याय संहिता के साथ तालमेल नहीं रखता, जो बलात्कार के लिये मृत्युदंड का प्रावधान नहीं करती। आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र सरकारों के इसी तरह के विधेयक राष्ट्रपति की अनुमति के लिये जूझते रहे हैं। दरअसल, विगत के अनुभव बताते हैं कि मौत की सजा इस तरह के अपराधों पर नियंत्रण करने में सफल नहीं हुई है। कानून के विशेषज्ञ ऐसी तुरत-फुरत सजा को मानव अधिकारों की प्रकृति के विरुद्ध बताते रहे हैं। तभी विधेयक के पारित होने को टीएमसी सरकार की हताशा से उपजा कदम बताया जा रहा है। आने वाले वक्त बताएगा कि यह विधेयक कानून बनने के बाद जमीनी हकीकत में बदलाव लाएगा या फिर कानूनों की लंबी सूची में इजाफा ही करेगा। हालांकि, इस विधेयक को अभी राज्यपाल व राष्ट्रपति की मंजूरी का इंतजार करना है, फिर इसकी प्रभावकारिता और नैतिक निहितार्थों से जुड़े व्यापक प्रश्न हमारे सामने खड़े हैं। बेहतर होगा कि राज्य सरकार ऐसे मामलों में जांच और न्यायिक प्रक्रिया में सुधार करके तेज व निष्पक्ष सुनवाई सुनिश्चित करे।

शख्सियत | शरत चंद्र बोस

भारतीय बैरिस्टर और स्वतंत्रता सेनानी

शरत चंद्र बोस बंगाल और पंजाब के विभाजन का विरोध करने वाले पहले व्यक्ति थे और उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। माउंटबेटन योजना के प्रकाशन से पहले और बाद में भी उन्होंने लगातार विभाजन का विरोध किया। इस मुद्दे पर उन्होंने जनवरी 1947 में कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया और फरवरी 1947 में विरोध अभियान शुरू किया।

शरत चंद्र बोस का जन्म 6 सितंबर 1889 को कटक, ओडिशा में हुआ था। उन्होंने 1909 में प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता से एमए की उपाधि प्राप्त की और 1911 में एक कानूनी व्यवसायी बन गए। उन्हें ऑनरेबल सोसाइटी ऑफ लिंकन इन सोसाइटी में नामांकित किया गया और 1912-1914 तक इंग्लैंड में बैरिस्टर के रूप में अभ्यास किया। वह बंगाल विधान परिषद के सदस्य थे और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का हिस्सा थे। बोस ने 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल होने के लिए अपनीप्रोफेशनल प्रैक्टिस छोड़ दी। उन्होंने बैंगलोर में क्रांतिकारियों का समर्थन किया और उन्हें वित्तपोषित किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन में शामिल होने के कारण उन्हें 1932 में तीन साल के लिए गिरफ्तार कर लिया गया।

बोस अपने भाई सुभाष चंद्र बोस द्वारा स्थापित फॉरवर्ड ब्लॉक जैसी समाजवादी गठबंधन वाली पार्टियों से जुड़े थे। 11 दिसंबर 1941 को उन्हें जापानी सेना के साथ मिलीभगत के ब्रिटिश संदेह पर घर में नजरबंद कर दिया गया था। वह चार साल तक ऐसे ही गिरफ्तार रहे। बोस ने धार्मिक आधार पर बंगाल और पंजाब के विभाजन का कड़ा विरोध किया और 6 जनवरी 1947 को कांग्रेस कार्य समिति से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने फरवरी 1947 में माउंटबेटन योजना के खिलाफ एक विरोध अभियान शुरू किया और संयुक्त स्वतंत्र बंगाल के गठन के लिए प्रयास किया।

उन्होंने भारत को एक समाजवादी गणराज्य बनाने की परिकल्पना की और अपनी राय व्यक्त करने के लिए द सोशलिस्ट रिपब्लिकन, महाजाति और द नेशन जैसे समाचार पत्र प्रकाशित किए। उन्होंने अगस्त 1947 में सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी का गठन भी किया।20 फरवरी 1950 को कोलकाता में उनका निधन हो गया।

बदलते वक्त के साथ चुनौतियों का दायित्व

प्रो. आर.सी. कुहाड़

भारतीय चिंतन में शिक्षक, आचार्य, गुरु और सद्गुरु का वर्णन लगभग प्रत्येक ग्रंथ में उपलब्ध है। भारत ने ज्ञान के स्रोत वेदों को लिपिबद्ध किया और विश्व को उस ज्ञान से परिचित कराया। हम सदैव कंगूरे की ईंट के गीत गाते हैं नींव की ईंट के गीत कौन गाता है? हम उस बीज को भूल जाते हैं जिसने गलकर इस वृक्ष का निर्माण किया था। वृक्ष का निर्माण बिना बीज के गले नहीं हो सकता। जिन ऋषि- मुनियों ने वेदों व उपनिषदों की रचना की, वह किसी लोभवश नहीं बल्कि सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की धारणा को मन में रखकर उन्होंने उस ज्ञान को लिपिबद्ध किया। उस ज्ञान की चर्चा अपने शिष्यों के साथ की, जिनका वर्णन उपनिषदों में मिलता है। दरअसल, शिक्षक, आचार्य, गुरु और सद्गुरु इन्हीं व्यक्तियों के नाम हैं। जिन्होंने अपने ज्ञान, आचरण, प्राण और चेतना द्वारा अपने परिसर को अनुप्राणित किया है, पुष्पित और पल्लवित किया है।

भारतीय चिंतन में जिस दिन चंद्रमा पूरा निकलता है, उस दिन पूर्णमासी होती है, एक पर्व होता है, त्योहार होता है, कभी उस त्योहार पर रक्षाबंधन होता है, कभी गुरु पर्व होता है, कभी होली होती है और कभी गुरु पूर्णिमा भी मनाई जाती है। गुरु पूर्णिमा मनाने के पीछे जो दर्शन है, वह दर्शन हमें हमारे गुरुओं, आचार्यों और सद्गुरुओं के नमन-वंदन, स्वागत-अभिनंदन करने को प्रेरित करता है। जिसमें हम अपने आचार्यों के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं।

आज 5 सितंबर है, जिसे भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन के उपलक्ष्य में, शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। गुरु पूर्णिमा और शिक्षक दिवस हम सबको यही प्रेरणा देते हैं कि हमें ज्ञान के स्रोत से जुड़े हुए व्यक्तियों का आदर और सम्मान करना चाहिए। वह सम्मान हमारे चिंतन में, हमारे व्यवहार में, हमारी वाणी में, हमारे कार्यों में परिलक्षित होना चाहिए। जिनके लिए हमारे मन में आदर व सम्मान का भाव होता है, हम उनका कहना मानते हैं। हम जिनका कहना मानते हैं, वह हमारे कार्य व्यवहार का अंग बन जाता है, व्यवहार व्यक्तित्व का दर्पण होता है। हमारे व्यक्तित्व से हमारे शिक्षक, आचार्य द्वारा सिखाई गई शिक्षा ही दिखाई देती है। जहां हमारी भौतिक उपस्थिति नहीं होती है, वहां पर हमारे यह गुण-अवगुण ही हमारा प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए हमें शिक्षकों का सम्मान करना चाहिए।

शिक्षक वह होता है जो जानता है कि बेहतर शिक्षण के लिए मन और मानसिकता का मेल होना आवश्यक है। शिक्षक ज्ञान का मानव कम्प्यूटर/संगम है। शिक्षण संस्थान के निर्माण में शिक्षक का कौशल और दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। शिक्षक को भावनाओं से निपटना आना चाहिए। वर्तमान में शिक्षक को डिजिटल शिक्षा के प्रसार से निपटने के लिए शिक्षण और सीखने के डिजिटल तरीकों को सीखने की आवश्यकता है। शिक्षक को स्वयं जागरूक होने और छात्रों में नई शिक्षा पद्धति, गतिविधियों, कार्यक्रमों और मूल्यांकन प्रक्रिया के बारे में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। शिक्षक जागरूकता को व्यवहार में बदलने में सक्षम होने चाहिए। यह शिक्षक ही है जो शिक्षण संस्थानों में मूल्य संस्करण लाता है। शिक्षक को कभी भी छात्रों के साथ उनकी जाति, धर्म और क्षेत्र के आधार पर व्यवहार नहीं करना चाहिए। एक शिक्षक सभी जातियों, धर्मों और क्षेत्रों से संबंधित होता है, या किसी से भी नहीं। शिक्षक को कभी भी अयोग्य छात्रों की प्रशंसा नहीं करनी चाहिए और कभी भी स्वार्थी उद्देश्यों के लिए उनका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। शिक्षक को जनता द्वारा कर्मचारी नहीं माना जाना चाहिए। शिक्षक को स्वयं को कर्मचारी नहीं समझना चाहिए क्योंकि शिक्षक ही एकमात्र व्यक्ति है जो राष्ट्र निर्माण में सक्षम है और राष्ट्रीय निर्माण प्रक्रिया में बड़ी भूमिका निभाता है। शिक्षक छात्रों को तार्किक, विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक रूप से सोचने में सक्षम बनाता है। शिक्षक हमें ज्ञान, विचार, अनुसंधान व संसाधनों को साझा करना सिखाते हैं। निस्संदेह, सबसे प्रतिभाशाली दिमाग को शिक्षा के क्षेत्र में आना चाहिए।

पूरे विश्व में इन शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए विद्यार्थियों का ही इतिहास दिखाई देता है। कौन नहीं जानता महान दार्शनिक सुकरात को, अरस्तु और प्लेटो को? कौन भूल सकता है चाणक्य को, कुमार जीव को, सर सीवी रमन को, महर्षि अरविंद को, ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी को जिन्होंने आजीवन शिक्षक धर्म निभाया। अध्यापक वो है जिसका ध्येय अध्यापन का हो और जो सदैव नवीन विचारों के लिए अपने आप को तत्पर रखे, और उनको समय, परिस्थिति, देश के अनुरूप विद्यार्थियों तक पहुंचाता रहे। उसे अपने विचारों को कार्य रूप में परिणत करने का भी ध्यान रखना होगा। तभी कक्षाओं में किया गया वार्तालाप समाज की समस्याओं के निराकरण का कारण बनेगा। शिक्षक को अपने कार्य व्यवहार और आचरण से अपने विद्यार्थियों के अंदर समयबद्धता को उनके एक गुण के रूप में विकसित करना होगा। शिक्षक को नए अन्वेषण के लिए निरंतर सीखने रहने की आदत बनानी होगी।

हमारे राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने क्या कहा था : 'यदि देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना है और रचनात्मक मस्तिष्कों वाला राष्ट्र बनाना है, तो तीन प्रमुख सामाजिक सदस्य हैं जो बदलाव ला सकते हैं : माता, पिता और शिक्षक। शिक्षक छात्रों को आत्मविश्वासी बनने, तनाव से निपटने, भावनात्मक स्थितियों से निपटने और सबसे बढ़कर राष्ट्र के प्रति प्रेम और ईमानदारी से काम करने में मदद करता है।'

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण ने दानों में सर्वश्रेष्ठ दान ज्ञानदान को ही कहा है। ज्ञान का दान करने वाला आचार्य होता है, शिक्षक होता है, गुरु होता है, इसलिए आज शिक्षक दिवस पर हम संकल्प लें कि हम शिक्षकों, आचार्यों और गुरुओं को वह सम्मान सदैव देते रहेंगे जो उन्हें दिया जाना चाहिए।

सहज योग

कंपन प्रेम, ज्ञान और आनंद है

आप आंखों से देख रहे हैं। इस प्रकार तीनों बिंदुओं के मध्य में कुछ ऊर्जा प्रवाहित हो रही थी, जैसे दोनों हाथों से कुछ बह रहा हो, जैसे कि सल्फर के दो हाथ हैं और वह अपने हाथों से ऑक्सीजन की ओर फेंक रहा है और ऑक्सीजन से सल्फर की ओर कुछ आ रहा है।

कंपन, वह प्रेम है, वह ज्ञान है, वह आनंद है। पहला शब्द है कंपन, जिसे आप तरंगें या परम (एब्सोल्यूट) कह सकते हैं। जब आप किसी तार को छूते हैं तो जो संगीत की तरंगें उत्पन्न होती हैं, उन्हें आप कंपन कह सकते हैं। भाषाओं को लेकर बड़ा गड़बड़झाला है। वैसे, आप इसे कुछ भी कह सकते हैं, लेकिन आप इन्हें हकीकत में देख सकते हैं। हाल ही में जब मैं लंदन में था तो वे टीवी पर इलेक्ट्रो-माइक्रोस्कोप से खींचे गए अणुओं की तस्वीरें दिखा रहे थे। वहां उन्होंने सल्फर आयोक्साइड का एक अणु दिखाया, जिसमें एक सल्फर अणु था और दो ऑक्सीजन अणु थे और ये एक साथ बंधे हुए थे। आखों से देखा जा सकता था, चित्र देखा जा सकता था। इसके बारे में कोई सवाल या भाषा का मुद्दा या संदेह नहीं था। आप आंखों से देख रहे हैं। इस प्रकार तीनों बिंदुओं के मध्य में कुछ ऊर्जा प्रवाहित हो रही थी, जैसे दोनों हाथों से कुछ बह रहा हो, जैसे कि सल्फर के दो हाथ हैं और वह अपने हाथों से ऑक्सीजन की ओर फेंक रहा है और ऑक्सीजन से सल्फर की ओर कुछ आ रहा है। आप इसे अपनी आंखों से देख सकते हैं। ऐसा महसूस हुआ जैसे वह हिल रहा हो। इसके बारे में उन्होंने कहा कि कंपन तीन प्रकार के होते हैं, तरंगें तीन प्रकार की होती हैं। पदार्थ में मौजूद है और विज्ञान ने अब इसे खोज लिया है। और यह बात अनादिकाल से दुनिया में कई लोगों द्वारा बताई गई है।ये कंपन जो मौजूद हैं, उन्हें पदार्थ में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, आप उनके बारे में संदेह नहीं कर सकते। क्या जाना जाता है और क्या देखा जा सकता है- ये कंपन, क्या हैं? सल्फर डाइऑक्साइड अणु में, जिसमें अनंत परमाणु होते हैं, किससे कंपन होता है? इसमें कंपन क्या हैं? इसके बारे में विज्ञान ने केवल एक शब्द का प्रयोग किया है- कंपन, और कुछ नहीं।

मैंने आपको पहले भी बताया था कि यदि आप डॉक्टरों से पूछें कि हृदय में धड़कन के पीछे कौन सी शक्ति है, तो वे कोई विवरण नहीं दे सकते, सिवाय यह कहने के कि यह 'ऑटोनॉमस नर्वस सिस्टम' द्वारा किया जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने इस पर शोध नहीं किया, बल्कि उनके पास जो ज्ञान है वह अधूरा और बहुत थोड़ा, एक छोटा सा हिस्सा है। इसके बारे में न्यूटन ने एक बार कहा था, 'मैं ज्ञान के तट पर कंकड़ इकट्ठा करने वाले एक छोटे बच्चे की तरह हूं।' यहां तक कि न्यूटन जैसे महान बुद्धिजीवी को भी लगता था कि वह काफी अज्ञानी है। एक व्यक्ति तब ज्ञानी बनना शुरू कर देता है जब वह सोचने लगता है कि 'हे भगवान, सूरदास की सारी अज्ञानता दूर कर दो।'

प्रस्तुति : धीरज सिंह

जीवन ऊर्जा | फिलिप जेम्स बेली : निधन- 6 सितंबर 1902 | देहावसान

मेरा पसंदीदा मंदिर विनम्र हृदय है

फिलिप जेम्स बेली अंग्रेजी कवि थे। उनका जन्म 22 अप्रैल 1816 में हुआ था। बेली को उनकी एक बड़ी कविता, 'फेस्टस' के लिए जाना जाता है, जिसे पहली बार 1839 में गुमनाम रूप से प्रकाशित किया गया था। फिर 1845 में दूसरे संस्करण के साथ इसका विस्तार किया गया। उनका निधन 6 सितंबर 1902 में हुआ था।

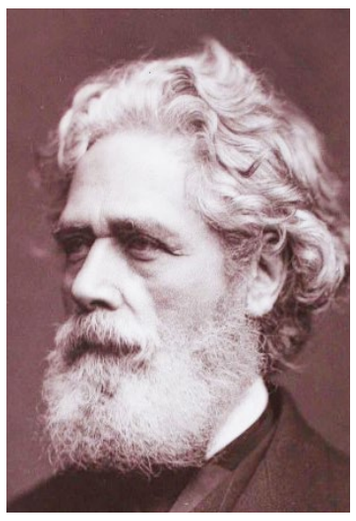

आइए हम मनुष्यों के बारे में कम और ईश्वर के बारे में अधिक सोचें। हम कर्मों में जीते हैं, वर्षों में नहीं; विचारों में, डायल पर आंकड़े नहीं। हमें दिल की धड़कन से समय गिनना चाहिए। वह सबसे ज्यादा जीता है, जो सबसे ज्यादा सोचता है, सबसे अच्छा महसूस करता है, सबसे अच्छा काम करता है। यह मायने नहीं रखता कि हम कितने दिन जीते हैं, लेकिन कैसे जीते है, ये बहुत मायने रखता है। प्रेम के बिना जीवन किसी भी चीज से कम नहीं है। दुनिया को बेहतर बनाने का सबसे खराब तरीका इसकी निंदा करना है। दीनता हर गुण का आधार है और जो सबसे नीचे जाता है वह सबसे सुरक्षित जीवन बनाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को ईश्वर का कार्य, अपने मन को एक विचार, अपने जीवन को ईश्वर की सांस समझें और प्रत्येक को महान विचारों और अच्छे कर्मों के द्वारा प्रयास करने दें, कि उसके पास जो स्वर्ग है, उसे अधिक से अधिक दिखाने के लिए। साहसपूर्वक और बुद्धिमानी से चलो, ऊपर एक हाथ है जो आपकी मदद करेगा। प्रत्येक आस्तिक ईश्वर का चमत्कार है। जहां अपूर्णता समाप्त हो जाती है, वहां स्वर्ग शुरू हो जाता है। सत्यों का सत्य प्रेम है। मेरा पसंदीदा मंदिर विनम्र हृदय है। हम जो सोचते हैं, उससे बहुत कम है, जो हमें भविष्य के लिए उपयुक्त बनाता है। कला मनुष्य का स्वभाव है; प्रकृति ईश्वर की कला है। मन और रात मिलेंगे, हालांकि मौन में, निषिद्ध प्रेमियों की तरह। कल्पना मन की हवा है। योग्य पुस्तकें साथी नहीं हैं - वे एकांत हैं। हम उनमें और अपनी सारी चिंताओं में खुद को खो देते हैं।

प्रेरक प्रसंग

संघर्ष का महत्व

एक बार एक किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया। कभी बाढ़ आ जाए, कभी सूखा पड़ जाए, कभी धूप बहुत तेज हो जाए, तो कभी ओले पड़ जाए। हर बार कुछ ना कुछ कारण से उसकी फसल थोड़ी ख़राब हो जाती थी। एक दिन बड़ा तंग आ कर उसने परमात्मा से कहा- देखिए प्रभु,आप परमात्मा हैं, लेकिन लगता है आपको खेती-बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है, एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिए, जैसा मैं चाहूं वैसा मौसम हो, फिर आप देखना मैं कैसे अन्न के भण्डार भर दूंगा। परमात्मा मुस्कुराए और कहा- ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम दूंगा, मै दखल नहीं करूंगा। अब, किसान ने गेहूं की फ़सल बोई, जब धूप चाही, तब धूप मिली, जब पानी चाही तब पानी। तेज धूप, ओले, बाढ़, आंधी तो उसने आने ही नहीं दी, समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की ख़ुशी भी, क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी। किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को की फसल कैसे करते हैं, बेकार ही इतने बरस हम किसानों को परेशान करते रहे। फ़सल काटने का समय भी आया, किसान बड़े गर्व से फ़सल काटने गया, लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा, एकदम से छाती पर हाथ रख कर बैठ गया! गेहूं की एक भी बाली के अंदर गेहूं नहीं था, सारी बालियां अंदर से खाली थी, बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा-प्रभु ये क्या हुआ? तब परमात्मा बोले-'ये तो होना ही था, तुमने पौधों को संघर्ष का ज़रा सा भी मौका नहीं दिया। ना तेज धूप में उनको तपने दिया, ना आंधी ओलों से जूझने दिया, उनको किसी प्रकार की चुनौती का अहसास जरा भी नहीं होने दिया, इसीलिए सब पौधे खोखले रह गए। जब आंधी आती है, तेज बारिश होती है ओले गिरते हैं तब पौधा अपने बल से ही खड़ा रहता है, वो अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है और इस संघर्ष से जो बल पैदा होता है वो ही उसे शक्ति देता है, ऊर्जा देता है, उसकी जीवटता को उभारता है। सोने को भी कुंदन बनने के लिए आग में तपने, हथौड़ी से पिटने, गलने जैसी चुनौतियों से गुजरना पड़ता है तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है,उसे अनमोल बनाती है।'

सर्वसिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ बिजाना शाजापुर मध्य प्रदेश

लौटना कभी आसान नहीं होता

एक व्यक्ति राजा के पास गया- और कहा कि वो बहुत निर्धन है, उसके पास कुछ भी नहीं,उसे सहायता चाहिये...! राजा दयावान था,उसने पूछा कि क्या सहायता चाहिये....? उस व्यक्ति ने कहाः थोड़ी सी भूमि- ताकि मैं खेती बाड़ी करके- अपना परिवार पाल सकूं। राजा ने कहा,कल सुबह के वक्त तुम यहां आना, भूमि पर तुम दौड़ना- जितनी दूर तक दौड़ पाओगे- वो पूरी भूमि तुम्हारी, किन्तु ध्यान रहे, जहां से तुम दौड़ना शुरू करोगे, सूरज डूबने तक तुम्हें वहीं लौटकर आना होगा- अन्यथा कुछ नहीं मिलेगा। व्यक्ति प्रसन्न हो गया,सुबह हुई,सूरज उदय होने के साथ व्यक्ति दौड़ने लगा व्यक्ति दौड़ता रहा, दौड़ता रहा. सूरज सिर पर चढ़ आया था- पर उस व्यक्ति का दौड़ना नहीं रुका था, वो हांफ रहा था पर रुका नहीं था! थोड़ा और.....! एक बार की मेहनत है- फिर पूरे जीवन आनंद ही आनंद है।

शाम होने लगी थी, व्यक्ति को याद आया,लौटना भी है, अन्यथा कुछ नहीं मिलेगा। उसने देखा,वो बहुत दूर चला आया था- अब उसे लौटना था- पर कैसे लौटता....? सूरज पश्चिम की ओर मुड़ चुका था, उस व्यक्ति ने पूरा दम लगाया। वो लौट सकता था - पर समय तेजी से बीत रहा था, थोड़ी ताकत और लगानी होगी. वो पूरी गति से दौड़ने लगा- पर अब दौड़ा नहीं जा रहा था,वो थक कर गिर गया और उसके प्राण वहीं निकल गये।

राजा यह सब देख रहा था, अपने अर्दलियों के साथ वो वहां गया, जहां व्यक्ति भूमि पर गिरा था! राजा ने उसे गौर से देखा- फिर केवल इतना ही कहाः इसे सिर्फ दो गज़ भूमि की दरकार थी,व्यर्थ ही ये इतना दौड़ रहा था! व्यक्ति को लौटना था, पर लौट नहीं पाया! वो लौट गया वहां, जहां से कोई लौट कर नहीं आता! अब ज़रा उस व्यक्ति के स्थान पर हम अपने आपको रख कर स्वयं से सवाल करे, कहीं हम भी तो वही भारी भूल नहीं कर रहे - जो उसने की! हमें अपनी चाहतों की सीमा का पता नहीं होता। हमारी ज़रूरतें तो थोड़ी होती हैं, पर इच्छाएं बहुत अधिक अपनी इच्छाओं की पूर्ति में हम लौटने की तैयारी ही नहीं करते- जब करते हैं तो बहुत देर हो चुकी होती है!_ फिर हमारे पास कुछ भी नहीं बचता अतः आज अपनी डायरी पेन उठायें, कुछ सवाल एवं उनके उत्तर अवश्य लिखेंः मैं जीवन की दौड़ में शामिल हुआ था, आज तक कहाँ पहुँचा और अंत मे मुझे जाना कहाँ है कब तक पहुँचना है इसी तरह दौड़ता रहा तो कहाँ- और कब तक पहुंच पाऊँगा...? हम सभी दौड़ रहे हैं,बिना यह समझे कि- सूरज समय पर लौट जाता है, हम लौटना नहीं जानते..! सच यह है कि जो- लौटना जानते हैं,वही जीना भी जानते हैं- पर लौटना इतना भी सरल नहीं होता !

पंडित कैलाशचंद्र शर्मा
वैदिक सनातन संस्कृति के प्रचारक व सर्व सिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ के संस्थापक।
मो. नं. 9425980556

यह अखबार "माध्यम कार्पोरेट सर्विसेज लि. " के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक अरुणलाल द्वारा ग्राउंड फ्लोर, ऑफिस नं. 2, के. के. चैम्बर्स, पुरुषोत्तमदास ठाकरदास रोड, फोर्ट, मुंबई- 400001 से प्रकाशित एवं सोमानी प्रिंटिग प्रेस, गाला नं. 4, एन.के.इंडस्ट्रियल इस्टेट, इनसाइड प्रवासी इंडिस्ट्रियल इस्टेट गेट नं. 2, गोरेगांव पू., मुंबई-63 से मुद्रित। फोन नं. 022-66555719 ईमेल : indiagroundreport@gmail.com कार्यकारी संपादक : राजा आदाटे (पी.आर.बी. अधिनियम के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)।

निश्छल प्रेम

निलेश जोशी 'विनायका'

उन दिनों दसवीं बोर्ड की परीक्षा देने गाँव से दूर जाना होता था। यही पहला मौक़ा होता था जब कोई पहली बार घर से दूर रहता था। मन में घर से दूर रहने के भय के साथ-साथ आज़ादी का उत्साह भी रहता था। मन में कई प्रकार के प्रश्न उठते और साथ-साथ काल्पनिक जवाब भी मिल जाते थे। कहते हैं किशोरावस्था तूफ़ान की अवस्था होती है। किशोरावस्था के उत्तरायण और युवावस्था के प्रारंभ की अवस्था बड़ी ही रोमांचकारी और जटिल होती है। दसवीं तक आते-आते लगभग हर प्राणी इस अवस्था तक पहुँच चुका होता है। नितेश को भी दसवीं की परीक्षा देने दूसरे क़स्बे में जाना था। मन में उत्साह था। अजीब सा डर भी था। बाहर अकेला कैसे रहूँगा? क्या मैं अकेला रह पाऊँगा? खाने का प्रबंध कैसे होगा? कौन बनाकर खिलाएगा? आदि आदि कई प्रश्न मन में उभरते थे। परंतु जो भी हो इम्तिहान के लिए तो जाना ही था। माँ से दूर रहने का दुर्भाग्य या सौभाग्य जो भी था उसे मिला। अपने एक मित्र शाहिद के साथ जो कि नितेश का सहपाठी था के साथ जाने का फ़ैसला हुआ। दोनों ने रहने के लिए एक सामान्य दंपती के यहाँ कमरा किराए पर ले लिया। दोनों अपनी-अपनी अध्ययन सामग्री के साथ आवश्यकता की सभी वस्तुएँ लेकर वहाँ पहुँच गए। जाकर अपना कमरा जमा लिया। उनका मकान मालिक बहुत ही ग़रीब परिवार से था। वह सिलाई करके अपने परिवार का पालन पोषण करता था। उसकी बीवी मेहनत मज़दूरी करके अपना गुज़ारा चलाती थी। इस तरह दोनों पति-पत्नी सवेरे घर से निकलते और सूरज डूबने के बाद रात के अँधेरे में घर लौट आते थे। दोनों थके-हारे आते तब तक घर का सारा काम उनकी बेटियाँ सलमा और रेशमा दोनों सँभाल लेती थीं। सवेरे काम पर जाना और रात तक लौटना उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा था। दोनों बेटियाँ घर के काम में और छोटे भाई की देखभाल में व्यस्त होने के कारण कभी विद्यालय का मुँह भी नहीं देख पाईं थीं। न ही आस-पास उनसे कोई सीधे मुँह बात करने वाला रहता था। इसलिए दुनियादारी का उन्हें ज़रा भी भान नहीं था। दोनों अकेली अपने काम में व्यस्त रहतीं थीं और अपने छोटे भाई की देखरेख में दिन गुज़ार रहीं थीं। इधर जब से उन्होंने कमरा किराए पर लिया तब से दोनों बहनों के अकेलेपन में बाधा आने लगी या यूँ कहें कि अकेलापन दूर हो गया। उनके साथ कभी-कभी थोड़ी-बहुत हँसी-ठिठोली हो जाया करती थी। वे एक दूसरे के काम में हाथ भी बँटा लिया करते थे। दिन भर काम में व्यस्त रहने के कारण उनके चेहरे भी मुरझाए हुए थे परंतु अब उनके चेहरों पर हँसी की फुहारें दिखाई देने लगीं। मन में नया उत्साह और उमंग उनके चेहरे पर स्पष्ट नज़र आने लगी थी। उन दोनों का भी इम्तिहान की तैयारी से ज़्यादा उन पर ध्यान रहता था। धीरे-धीरे बातचीत का दौर आगे बढ़ता रहा। वे भी अपना काम जल्दी समाप्त करने और समय बचाने की कोशिश में लगी रहतीं थीं। जिससे शेष समय में वे उनसे बात कर सकें। जब बातों का दौर चलता तो धीरे-धीरे एक दूसरे के मन की बातों में गुम हो जाते और समय का पता ही नहीं रहता। समय अपनी गति से बढ़ रहा था। समय के साथ-साथ नज़दीकियाँ भी बढ़ती गईं। एक समय ऐसा भी रहा कि वे दोनों अपने घर के कामकाज के साथ-साथ उनके कमरे का काम जैसे साफ़-सफ़ाई, झाड़ू-पोछा आदि भी कर देतीं थीं। पानी भर देतीं, कपड़े धो देतीं और भी बहुत सारे कार्य बिना कहे ही कर देतीं थीं। दोनों ओर से एक दूसरे का ख़्याल रखा जाने लगा था। अब ऐसी स्थिति हो गई थी कि दोनों पक्ष एक दूसरे को देखे बिना बेचैन रहने लगे थे। परीक्षा का आज अंतिम दिन था। एक डेढ़ महीना कैसे गुज़र गया कुछ पता ही नहीं चला। जैसे कल की ही बात थी। आज अंतिम पेपर देकर घर जाने का उत्साह था। वे दोनों इस बात से अनजान थीं कि ये आज ही चले जाएँगे। वे पेपर देकर आए और कमरे में जाकर अपने अपने सामान बिस्तर आदि समेटने लगे। बहुत देर तक जब दोनों ने उन्हें बाहर नहीं देखा तो दोनों बहनें कमरे में आ गईं। यहाँ आकर दोनों को आश्चर्य हुआ। क्योंकि वह चुपचाप बिस्तर समेटकर बाँध रहे थे। जिन्होंने कभी विद्यालय के दरवाज़े पर पैर नहीं रखा उन्हें क्या पता कि आज उनकी सभी परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी हैं।

थोड़ी देर मूर्तिवत देखने के बाद पूछने लगीं कि हम से ऐसी क्या ग़लती हो गई जो हमें छोड़कर जाने की तैयारी कर रहे हो। दोनों की आँखों से अश्रु की धाराएँ बह रहीं थीं जो उनके वक्ष स्थल को गिला किए जा रहीं थीं। इधर इनका मन उन्हें छोड़कर जाने का नहीं था। आज उनके साथ बैठकर ढेर सारी बातें करने और उन्हें देखते रहने की हसरत थी। परंतु परीक्षा समाप्ति और माँ की ममता ऐसे दो कारण थे जो उन्हें घर की ओर खींच रहे थे। जब तक उन्होंने सारा सामान नहीं बाँध लिया तब तक वह ना जाने किस विचार में खोई टकटकी लगाकर उन्हें ही देखती रहीं। वे भी सामान बाँधने में जानबूझकर देरी किए जा रहे थे। उनको गाँव ले जाने वाली अंतिम बस सायं काल 5:00 बजे की थी। जैसे-तैसे उन्होंने चार तो कमरे पर ही बजा दिए। अब वहाँ से प्रस्थान की बारी थी। नितेश को जीवन में पहली बार ऐसा महसूस हो रहा था कि मैं इन्हें छोड़ कर क्यों जा रहा हूँ? उसका मन भारी हो रहा था। कलेजा काँप रहा था। अंदर ही अंदर रो रहा था। अजीब सा महसूस हो रहा था। लेकिन जाना तो था ही। आख़िर हिम्मत से काम लिया और वहाँ से निकल पड़े। वे दोनों उन्हें घर के मुख्य दरवाज़े तक विदा करने आईं और रुँधे गले से कहने लगी कि 2 महीने बाद हमारा निकाह है। उसमें तुम ज़रूर आना। मैं तुम्हें चिट्ठी लिखूँगी। ऐसा कहते हुए आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने भी ज़रूर आने के वादे के साथ हामी भरी और चल पड़े । वे उन्हें आँखों से ओझल होने तक टकटकी लगाकर चकोर की भाँति देखती रहीं। अक्षर ज्ञान से अछूती पगलियों को क्या पता कि बिना नाम और पते के चिट्ठी नहीं पहुँच पाती और जिसने कभी स्कूल नहीं देखा वह चिट्ठी-पत्री कैसे भेजेंगी? नितेश बस में बैठकर उनके निश्चल प्रेम और भोलेपन के बारे में सोचता रहा। थोड़ी देर में बस हॉर्न बजाती हुई चल पड़ी। स्मृतियों के सागर में गोता लगाते लगाते कब गाँव आ गया पता ही नहीं चला।

गजल

इलाही ! चल बता सबको ज़रा

डॉ. रामवृक्ष सिंह

इलाही! चल बता सबको ज़रा, यह माजरा क्या है?
कि तेरा दीन कैसा है? कि तेरा फ़लसफ़ा क्या है?
तू सादिक़ है तू हाफ़िज़ है कि तू हमदर्द है सबका
अगर तेरा त'अर्रुफ ये, तो फिर ये हो रहा क्या है?
तुझे सबसे मुहब्बत है, करम सब पर बराबर है,
दहर में नाम पर तेरे, बता, झगड़ा भला क्या है?
क्या तुझको ख़ून भाता है? कज़ाएं हैं तेरी हमदम?
तो मरने-मारने वालों का तुझसे वासता क्या है?

अभिमन्यु फंसा फिर से

आज अर्जुन नहीं आयेंगे
अभिमन्यु तुम्हें चक्रव्यूह
स्वयं भेदना होगा
यह जीवंत युद्ध है
उहापोहों का
लोभों का
अभिमानों का
अपमानों का
रहेगा भीम चिल्लाता
बाहर से
चक्रव्यूह के
नकुल, दुर्योधन को न रोक पायेगा
यह संकट घना
अब भी बना हुआ है
अभिमन्यु फँसा हुआ है

अर्जुन परिस्थितिओं में फँसा
न कोई रोया
न कोई हँसा
सारथी कृष्ण चले कहीं?
तुम्हारे नुकीले तीर
अब नहीं चुभते
नहीं करते घात
हृदय के भीतर
टूटी नोक पर
गली लकड़ी का तीर
ढीली प्रत्यंचा
पर नहीं चढ़ेगा
अहो: आज अभिमन्यु
फिर मारा जायेगा

राजेश 'ललित'

लघुकथा

ज़िन्दगी के फ़लसफ़े

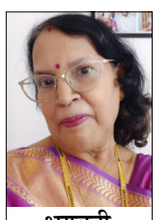

भगवती सक्सेना गौड़

आज सुरुचि ऑफ़िस से लौटने के बाद मम्मी को देखकर फिर परेशान हो गयी। पापा के जाने के बाद अकेली रह गयी मम्मी को वो पिछले हफ़्ते अपने पास ले आयी थी।

दिन भर शून्य में ताकती, ख़ामोश मम्मी को देखकर उसका मन दुखी हो जाता था।

अचानक उसे ख़्याल आया, उसकी एक सहेली मनोविज्ञान की डॉक्टर है। और कार स्टार्ट कर चल दी, उस सहेली से सलाह मशवरा करने के लिए।

"हैलो, डॉक्टर प्रज्ञा, कैसी हो?"

"वेरी फाइन, आज कैसे मेरी याद आ गयी।"

"सुन यार, अपनी मम्मी को मैं ले आयी हूँ, अकेली पड़ गयी थीं। रिटायर्ड टीचर हैं, जब तक पापा साथ रहे, आल राउंडर थीं, हर काम में होशियार, सबसे आगे रहती थीं। जब से पापा गये, जीवन से उदासीन हो गयी हैं, कैसे उनको ख़ुश रखूँ?"

"उनको अपने साथ घुमाओ, फिराओ, मूवी ले जाओ।"

"अरे यार, सुने तब न, खाना भी ठीक से नहीं खाती।"

"एक बात बताऊँ, आज उनकी जनरेशन के जितने भी लोग रह गए हैं, हम लोगों के पास सब बेशक़ीमती हीरे हैं। अब हम सब का ये कर्त्तव्य है कि उनकी जितनी भी उम्र बची है, पाँच या दस वर्ष उसमें उनको येन केन प्रकारेण प्रसन्न रखने की कोशिश करे। जितना उन्होंने हमारे लिए परिश्रम किया, उतना हम अपने बच्चों के लिए नहीं कर सकते। आज तुम्हें अपनी मम्मी की फ़िक्र है, पर ज़रूरी नहीं कि 'टू मिनट नूडल' वाली तुम्हारी संतान भी तुम्हारी चिंता करे, समय बहुत तेज़ी से बदल रहा है। इसलिए माई डिअर सुरुचि कोई भी तरीक़े से, उन्हें बहलाओ, जहाँ उनका मन लगे, हरिद्वार, ऋषिकेश, गोआ, उनको घुमाकर लाओ। उनसे हमेशा बातें ज़रूर किया करो।"

"सही प्रज्ञा तुमसे बातें करके शान्ति मिली।"

औक़ात

विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'

हरे बबूल पर छाई अमरबेल ने, जब पास सूखे ठूँठ पर लौकी की बेल को नित हाथों बढते देखा तो, वो अन्दर ही अन्दर उससे ईर्ष्या करने लगी। एक दिन तो उससे रहा नहीं गया और कहने लगी- ₹अरे, ओ लौकी की बेल! तू मुझे दिखा-दिखा कर, क्या अपने चौड़े-चौड़े पत्तों को हिलाती है, फूलों को खिलाती है और लम्बी-लम्बी लौकी देने लगी है। तुझे पता भी है, तू कितने दिन रहेगी? वर्षा के मौसम के साथ-साथ तेरा भी पता नहीं चलेगा कहाँ गई...? मुझे देख, मैं वर्षा से पहले भी थी, आज भी हूँ, और आगे भी रहूँगी। अमरबेल की बात सुन, लौकी की बेल बोली – ₹बहन, तुम ठीक कहती हो, मेरी उम्र अधिक नहीं है पर मैं ख़ुश हूँ क्योंकि मैं अल्प जीवन में भी इस सूखे पेड़ को हरेपन का अहसास करा कर, उसे साहचर्य का सुख देकर अपने को धन्य जो मानती हूँ। अगर हम थोड़े जीवन में भी किसी को सुख व ख़ुशी दे जाएँ तो वो अल्प जीवन भी बहुत बड़ा लगने लगता है। एक तुम हो, अमरबेल! वास्तव में तुम्हारी उम्र मुझसे बहुत है पर, तुम्हारा जीवन, दूसरों पर आश्रित जीवन है तुम हमेशा दूसरों का शोषण कर अधिक जीवित रहती हो, तुम्हें जो भी पेड़ अपने सिर पर बैठा कर , तुम्हें मान देता है, जान देता है, तुम अपने जीवन को बचाने के प्रयास में उसी को पल-पल नष्ट करने पर तुली रहतीं हो। और एक दिन तुम उस हरे-भरे पेड़ को सूखा ठूँठ बना देती हो। फिर मेरे जैसी कोई बेल उसे पुनः जीवन तो नहीं दे पाती पर कुछ दिनों के लिए ही सही ,उसे हरेपन का अहसास तो करा ही देती है। लौकी की बेल की बात सुनकर, अमरबेल निरुत्तर हो गई, उसे अपनी 'औकात' का पता चल चुका था ...।

राशिफल — प्रियंका जैन

मेष — उत्साहवर्द्धक सूचना मिलेगी। भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। फालतू खर्च होगा। बड़ा काम करने का मन बनेगा। कारोबार में लाभ होगा। शेयर मार्केट व म्युचुअल फंड आदि मनोनुकूल लाभ देंगे।

वृष — चोट व रोग से बाधा संभव है। झंझटों में न पड़ें। दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं। यात्रा लाभदायक रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी। कारोबार में वृद्धि होगी। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। समय अनुकूल है, लाभ लें।

मिथुन — विवाद को बढ़ावा न दें। फालतू खर्च पर नियंत्रण रखें। कुसंगति से बचें। घर-परिवार की चिंता रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। किसी व्यक्ति के उकसाने में न आएं। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। आय बनी रहेगी।

कर्क — डूबी हुई रकम प्राप्त हो सकती है, प्रयास करें। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। निवेशादि मनोनुकूल लाभ देंगे। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। व्यापार में लाभ बढ़ेगा। किसी मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर मिल सकता है।

सिंह — योजना फलीभूत होगी। कार्यस्थल पर परिवर्तन संभव है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मित्रों का सहयोग कर पाएंगे। निवेश शुभ रहेगा। नौकरी में कार्यभार तथा अधिकार दोनों बढ़ सकते हैं।

कन्या — कानूनी अड़चन दूर होकर स्थिति मनोनुकूल रहेगी। कारोबार में वृद्धि के योग हैं। धन प्राप्ति सुगम होगी। नौकरी में चैन रहेगा। लंबे समय से रुके कार्यों में गति आएगी। धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने का अवसर मिल सकता है।

तुला — बुरी खबर मिल सकती है, धैर्य रखें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। काम करने की इच्छा नहीं होगी। विवाद से क्लेश संभव है। बनते कामों में बाधा उत्पन्न होगी। मेहनत अधिक और लाभ कम रहेगा। नौकरी में कार्यभार रहेगा।

वृश्चिक — स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उत्साह की अधिकता तथा व्यस्तता रहेगी। राजकीय बाधा दूर होगी। कारोबार ठीक चलेगा। महत्वपूर्ण निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

धनु — स्थायी संपत्ति में वृद्धि हो सकती है। प्रॉपर्टी के कामकाज बड़ा लाभ दे सकते हैं। निवेश शुभ रहेगा। नौकरी में प्रशंसा मिलेगी। रोजगार मिलेगा। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। पार्टनरों से मतभेद दूर होंगे।

मकर — रचनात्मक कार्य पूर्ण व सफल रहेंगे। पार्टी व पिकनिक का आयोजन होगा। आय में वृद्धि होगी। परीक्षा व साक्षात्कार में सफलता प्राप्त होगी। व्यस्तता रहेगी। स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा।

कुंभ — विवाद को बढ़ावा न दें। किसी व्यक्ति के व्यवहार से स्वाभिमान को ठेस पहुंच सकती है। दुःखद समाचार मिल सकता है। बेकार बातों की तरफ ध्यान न दें। दौड़धूप अधिक होगी। नौकरी में मातहतों का सहयोग कम मिलेगा।

मीन — मेहनत का फल पूरा-पूरा मिलेगा। यात्रा लाभदायक रहेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मित्रों का सहयोग कर पाएंगे। बड़ा काम करने का मन बनेगा। पारिवारिक सहयोग मिलेगा। आय में वृद्धि होगी।

इन बातों को अपनाकर जीवन करें खुशहाल

सुबह घर से काम के लिए निकलने से पहले नियमित रूप से गाय को रोटी दें।

एक पात्र में जल लेकर उसमें कुंकुम डालकर बरगद के वृक्ष पर नियमित रूप से चढ़ाएं।

सुबह घर से निकलने से पहले घर के सभी सदस्य अपने माथे पर चन्दन तिलक लगाएं।

मछलियों की आटे की गोली बनाकर खिलाएं।

चींटियों को खोपरे व शकर का बूरा मिलाकर खिलाएं।

शुद्ध कस्तूरी को चमकीले पीले कपड़े में लपेटकर अपनी तिजोरी में रखें।

इन उपायों को पूर्ण श्रद्धा के साथ करने से जीवन में समृद्धी व खुशहाली आने लगती है।

अपने पति को खिलाएं खीर, बढ़ेगा प्रेम

अगर आपके दाम्पत्य जीवन में पहले जैसी मधुरता नहीं रही या फिर रोज किसी न किसी बात पर पति-पत्नी के बीच झगड़े होते हों तो समझ लीजिए कि आपके दाम्पत्य जीवन में प्रेम का अभाव हो गया है। इस प्रेम को बढ़ाने के लिए एक छोटा मगर असरदार उपाय इस प्रकार है-

दाम्पत्य जीवन सुखी हो जाएगा

शुक्ल पक्ष में पडने वाले किसी शुक्रवार के दिन पत्नी अपने हाथों से प्रेम पूर्वक साबूदाने की खीर बनाएं लेकिन उसमें शक्कर के स्थान पर मिश्री डालें। इस खीर को सबसे पहले भगवान को अर्पित करें और इसके बाद पति-पत्नी थोड़ी-थोड़ी एक-दूसरे को खिलाएं। भगवान से सुखमय दाम्पत्य की कामना करें। इस दिन किसी लक्ष्मी मंदिर में जाकर इत्र का दान करें। अपने शयनकक्ष में इत्र कदापि न रखें। कुछ दिनों तक यह प्रयोग करते रहें । कुछ ही दिनों में दाम्पत्य जीवन सुखी हो जाएगा।

प्रियंका जैन
9769994439

खबर संक्षेप

खगड़िया के 81 सौ एकड़ का नहीं होगा भू-सर्वेक्षण

खगड़िया। खगड़िया में दूसरे चरण में टोपो लैंड का सर्वे नहीं होगा। जिला बंदोबस्त पदाधिकारी अरुण कुमार झा ने इसको लेकर सभी पंचायतों के मुखिया, कानूनगो, शिविर प्रभारी सह सहायक बंदोबस्त पदाधिकारी एवं संबंधित पदाधिकारियों को पत्र लिखकर टोपो भूमि के विशेष सर्वेक्षण पर रोक लगाने का आदेश दिया है। बुधवार को अनुमंडल सभागार में सर्वे अमीन को ट्रेनिंग दी गयी। ट्रेनिंग के दौरान जिला बंदोबस्त पदाधिकारी ने कहा कि टोपो लैंड भूमि का सर्वे राज्य स्तर से जारी आदेश के बाद शुरु होगा। उल्लेखनीय है कि बीते 29 अगस्त को राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के अपर मुख्य सचिव की अध्यक्षता में आयोजित राज्य स्तरीय बैठक में टोपो भूमि का सर्वेक्षण फिलहाल रोकने को कहा गया था। इधर विभागीय आदेश के बाद जिले के आधे दर्जन से अधिक राजस्व ग्रामों में टोपो भूमि के सर्वे पर रोक लगा दी गई है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ ACB की बड़ी कार्रवाई

पलामू : भ्रष्टाचार के खिलाफ पलामू में एसीबी (ACB) की टीम ने एक बार फिर बड़ी कार्रवाई की है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने जिले के सदर अस्पताल में रंगे हाथ घूस लेते फार्मासिस्ट परमानंद कुमार को गिरफ्तार कर लिया है। वह किसी काम के एवज में 10 हजार रुपये की रिश्वत ले रहा था।

स्कूल की जर्जर स्थिति देख ग्रामीण नाराज

रांची : चान्हो प्रखंड के बेतलंगी गांव में जर्जर हो चुके स्कूल भवन के निर्माण नहीं होने से नाराज ग्रामीणों ने वोट बहिष्कार की चेतावनी दी है। ग्रामीणों के अनुसार गांव में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय के भवन की स्थिति अत्यंत जर्जर हो चुकी है। पिछले दो साल से वे शिक्षा विभाग व जनप्रतिनिधियों से इसकी मरम्मत कराने या इसकी जगह पर नया भवन बनाने की मांग कर रहे हैं, लेकिन किसी ने गंभीरता नहीं बरती है। ग्रामीणों ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि स्थिति यही रही, तो वे आगामी विस चुनाव में वोट का बहिष्कार करेंगे। ग्रामीणों के अनुसार स्कूल भवन की जर्जर स्थिति को देखते हुए शिक्षा विभाग ने करीब एक साल पहले बच्चों को दो किमी दूर खूंटीटोली स्थित प्राथमिक विद्यालय में स्थानांतरित कर दिया है। इस कारण वहां तक जाने-आने में हो रही परेशानी से छोटे बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो गयी है।

भालू का आतंक, शौच गए युवक पर किया हमला

एजेंसी । बेतिया

बिहार में पश्चिमी चंपारण के वाल्मीकि टाइगर रिजर्व वन प्रमंडल 2 के वनवर्ती गांवों में रहने वाले ग्रामीण लगातार हो रहे वन्यजीवों की चहलकदमी और उनके हमले से भय के माहौल में जीने को मजबूर हैं। इसी क्रम में बुधवार की रात करीब 9 बजे गोनौली वन क्षेत्र के गोनौली गांव में बहादुर राव खाना खाने के बाद लघुशंका के लिए बाहर निकले। तभी एक भालू जो अपने दो शावकों के साथ था उसने बहादुर राव पर हमला कर बुरी तरह जख्मी कर दिया।

वन विभाग को इसकी सूचना दी गई

इस हमले के बाद पीड़ित के चिल्लाने पर लोग शोर मचाने लगे। तब भालू शावकों के साथ खेतों की ओर भाग निकला। आनन-फानन में परिजनों द्वारा उपचार के लिए पीड़ित को हरनाटांड़ पीएचसी ले जाया गया। जबकि वार्ड नंबर 9 की वार्ड सदस्य अंजू देवी और वार्ड प्रतिनिधि संजय साह द्वारा इसकी सूचना वन विभाग को दी गयी।

पिछले महीने भी भालू ने किया था हमला

इधर इस हमले से ग्रामीणों में काफी आक्रोश है। ज्ञात हो कि 4 अगस्त को भी गोनौली गांव निवासी धनवंती देवी (40 वर्ष) अपने घर के पीछे धान की खेत में निराई-गुड़ाई (सोहनी) कर रही थी। तभी वन क्षेत्र से निकल कर एक भालू उन पर हमला कर दिया था। जिसमें उक्त महिला भी बुरी तरह से जख्मी हो गयी थी। बता दें कि वन्यजीव कभी भी, कहीं भी दिन हो या रात हो विचरण करते रहते है। कभी कभी यह ग्रामीणों पर हमला कर उन्हें जख्मी भी करते रहते हैं।

वन प्रक्षेत्र पदाधिकारी ने क्या कहा ?

इस बाबत पूछे जाने पर गोनौली वन प्रक्षेत्र पदाधिकारी राजकुमार पासवान ने बताया कि सूचना प्राप्त हुई है। मौके पर वन कर्मियों की टीम को भेजा गया है। अग्रेतर कार्रवाई की जा रही है। साथ ही बताया कि वन क्षेत्र से रिहायशी क्षेत्र का सीमा खुली होने के कारण वन्यजीव रिहायशी क्षेत्र की ओर आ जाते हैं। लोग सजग और सतर्क रहे। उन्होंने बताया कि आवेदन करने पर अग्रेतर विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

योगी सरकार में मंत्री कपिल अग्रवाल के खिलाफ गैर जमानती वारंट

▶▶ पेश न होने पर कोर्ट सख्त

एजेंसी । लखनऊ

यूपी की योगी सरकार में मंत्री कपिल देव अग्रवाल के खिलाफ मुजफ्फरनगर की एमपी-एमएलए विशेष अदालत ने गैर जमानती वारंट जारी किया है। कपिल देव अग्रवाल पर आचार संहिता उल्लंघन समेत अन्य धाराओं में केस चल रहा है। कपिल देव अग्रवाल योगी सरकार में कौशल विकास राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हैं।

13 सितंबर को अदालत में पेश होने का आवेदन

अग्रवाल के वकील विनोद कुमार गुप्ता ने बृहस्पतिवार को पीटीआई-भाषा को बताया कि विशेष एमपी/एमएलए अदालत के न्यायाधीश देवेन्द्र सिंह फौजदार ने आचार संहिता उल्लंघन से जुड़े एक मामले में अदालत में पेश नहीं होने पर बुधवार शाम मंत्री कपिल देव अग्रवाल के खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी करते हुए उन्हें 13 सितंबर को अदालत में पेश होने के आदेश दिये हैं। गुप्ता ने बताया कि अग्रवाल 13 सितंबर को अदालत में पेश होंगे।

गोरक्षनगरी में शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के साथ बनेगा को-वर्किंग स्पेस

एजेंसी । गोरखपुर

मुख्य संवाददाता मुख्यमंत्री वैश्विक नगरोदय योजना के तहत गोरक्षनगरी में नगर निगम शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और को-वर्किंग स्पेस बनाएगा। ट्रांसपोर्टनगर में पिछले दिनों अवैध कब्जे से मुक्त कराई गई जमीन पर नगर निगम इसे बनाने का प्रस्ताव तैयार कर रहा है। अनुमान के मुताबिक तकरीबन 30 करोड़ रुपये खर्च होंगे। शासन में भेजे गए प्रस्ताव की स्वीकृति के बाद इस पर काम शुरू होगा। अपर नगर आयुक्त निरंकार सिंह ने 50 करोड़ रुपये की 1860 वर्ग मीटर जमीन पर एक माह पहले ही कब्जा लेकर बाड़बंदी कराई थी। ट्रांसपोर्टनगर पुलिस चौकी के पास पड़ी इस जमीन पर पूर्व विधायक परिवार का कब्जा था लेकिन अदालतों में लम्बी लड़ाई में हार जाने के बाद उन्होंने जमीन से कब्जा छोड़ दिया। सिक्सलेन और कटनिया बांध से सटी इस जमीन पर राजस्व रिकॉर्ड में तालाब लेकिन मौके पर नदारद है। आसपास काफी निर्माण भी है। फिलहाल इसी जमीन पर फ्रीलांसर, छोटे स्टार्ट अप और वर्क फ्रॉम होम वाले लोगों के लिए नगर निगम को-वर्किंग स्पेस बनाएगा। को-वर्किंग स्पेस और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स एक ही बहुमंजिला भवन में होंगे। नीचे के फ्लोर पर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स तो ऊपर को-वर्किंग स्पेस होगा। इसकी डिजाइन तैयार की जा रही है। इस को-वर्किंग स्पेस में बैठ कर काम करने के लिए सुविधाजनक सुरक्षित वातानुकूलित वातावरण, डेस्क, कुर्सियां, हाई स्पीड इंटरनेट, बैठक कक्ष, टॉयलेट और कैंटीन की सुविधाएं मिलेंगी। यह साझा कार्यस्थल होगा जहां फ्रीलांसर, रिमोट कर्मचारी, स्टार्टअप टीमें और छोटे व्यवसाय करने वाले एक साथ काम कर सकेंगे। यह कार्यस्थल उन्हें सामाजिक और उत्पादक वातावरण प्रदान कराएगा।

सीएम योगी ने रामनाथ स्वामी मंदिर का किया लोकार्पण

एजेंसी । अयोध्या

लोकसभा चुनाव के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का छठवीं बार अयोध्या आगमन गुरुवार को हुआ। इस मौके पर उन्होंने हनुमानगढ़ी में माथा टेका और फिर राम मंदिर में रामलला का की आरती उतारी और प्रदेश के कल्याण की कामना की। मुख्यमंत्री योगी ने व्यस्त कार्यक्रम के दौरान सबसे रामसेवकपुरम पहुंचे। यहां उन्होंने निर्धारित मुहूर्त 10।45 बजे रामनाथ स्वामी टेम्पिल के गोपुरम (शिखर) का पूजन किया। इसके बाद मंदिर में विराजित भगवान शिव का कुंभाभिषेक किया। इस अवसर पर आयोजन समिति की ओर से मुख्यमंत्री का स्वागत किया गया।

बिजली की चपेट में आने से 50 वर्षीय अधेड़ की मौत

एजेंसी । बोकारो

बोकारो के नावाडीह प्रखंड में बिजली की चपेट में आने से एक 50 अधेड़ की मौत हो गयी। घटना बुधवार शाम 6 बजे नारायणपुर थाना क्षेत्र की है। मृतक की पहचान प्रयाग तुरी सुरही गांव का रहने वाला था। सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वह सपरिवार पेंक गांव में स्थित अपने ससुराल में रहता था। बताया जाता है कि बोकारो का रहने वाला मृतक प्रयाग तुरी पिकअप वैन से खाद्य सामाग्री लेकर पिपराडीह में स्थित गुड्डू वर्णवाल के किराना दुकान पर पहुंचा। इसके बाद वह वैन के ऊपर में चढ़कर चालक को गाड़ी पीछे करने का इशारा करने लगा। लेकिन इस दौरान वह ओवरहेड बिजली की तार के चपेट में आ गया। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गयी। गुरुवार को पुलिस शव का पोस्टमार्टम के लिए तेनुघाट अनुमंडलीय अस्पताल गयी। इससे पहले उन्होंने परिजनों से मुलाकात कर मामले की जानकारी ली। हादसे के बाद से परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। गांव में शोक की लहर है। ग्रामीणों ने बताया कि मृतक प्रयाग तुरी खलासी का काम करता था।

ट्रेन से कटकर बांका की महिला की मौत

एजेंसी । जमुई

बिहार के जमुई जिले के सिमुलतला थाना क्षेत्र के टेलवा बाजार हॉल्ट के पास ट्रेन से कटकर एक महिला की मौत हो गई। घटना बुधवार की बताई जा रही है। बता दें कि मृतक महिला की पहचान नहीं हो पाई थी। बुधवार देर शाम महिला की पहचान हुई जिसके बाद गुरुवार सुबह महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा गया। मृतक महिला की पहचान बांका जिले के आनंदपुर ओपी थाना क्षेत्र के मोथडीह गांव के घुलटन यादव की 26 वर्षीय पत्नी फुलवा देवी के रूप में की गई है। घटना टेलवा और सिमुलतला के आउटर सिंगल पोल नंबर 346/32 के पास की बताई जा रही है।

बैंक से पैसा निकालने जा रही थी महिला

इस घटना के बारे में मृतका के ससुर बाबू लाल यादव का कहना है कि बुधवार को ही वो घर से आधार कार्ड लेकर बैंक से पैसा निकालने जाने की बात कहकर निकली थी। हमलोगों ने काफी खोजबीन की बाद उसका कुछ पता नहीं चला। देर शाम खबर मिली कि सिमुलतला में ट्रेन से कटकर एक महिला की मौत हो गई है।

पति बैंगलोर में करता है मजदूरी

परिजनों ने बताया कि महिला भैरोगंज बैंक पैसा निकालने के लिए गई थी। ग्रामीणों की मानें तो भैरोगंज इलाके से कई लोग टेलवा बाजार आते हैं। स्थानीय लोगों द्वारा आशंका जताई जा रही है कि वह पटरी पार करने के दौरान ट्रेन के चपेट में आ गई होगी। महिला का पति घोलटन यादव बैंगलोर में रहकर मजदूरी करता है। जानकारी के मुताबिक महिला के तीन बच्चे हैं। घटना के बारे में जानकारी देते हुए सिमुलतला थाना की पुलिस ने बताया कि महिला की मौत ट्रेन से कटकर हुई है।

सिगरेट का पैसा मांगने पर विवाद, फायरिंग

एजेंसी । रोहनिया

चितईपुर-चुनार रोड के अमरा चौराहे पर स्थित बीयर की दुकान के पास बुधवार रात सिगरेट का पैसा मांगने पर तीन मनबढ़ों ने दुकानदार से मारपीट कर ली। दुकानदार के शोरगुल मचाने पर जुटे स्थानीय लोगों ने उन्हें जमकर पीटा। किसी तरह जान बचाकर भागे मनबढ़ कुछ देर बाद लौटे और दुकानदारों पर फायरिंग कर दी। संयोग से दुकानदार बच गए। पुलिस सीसीटीवी कैमरे की फुटेज के आधार पर उनकी तलाश कर रही है। अमरा चौराहा पर बीयर की दुकान के पास अमन तथा प्रदीप उर्फ कल्लू राजभर की चाय-पान और नमकीन की दुकान है। बुधवार रात करीब नौ बजे बुलेट से तीन युवक आए। बीयर पी और दुकानदार से तीन सिगरेट मांगी। इसके बाद बिना पैसा दिए जाने लगे। दुकानदार के टोकने पर गाली-गलौज करते हुए मारपीट शुरू कर दी। इतने में लोग जुट गए और उन तीनों को जमकर पीटा। तब वहां से तीनों बदमाश चप्पल छोड़कर भाग गए। आधा घंटा बाद लौटे और दुकानदारों से चप्पल के बारे में पूछा। इसी दौरान दुकानदारों पर गोली चला दी। भागते समय एक और गोली चलाई।

व्यापार जगत

लगातार दूसरे दिन गिरावट के साथ बंद हुआ शेयर बाजार

एजेंसी । नई दिल्ली

घरेलू शेयर बाजार गुरुवार को लगातार दूसरे दिन कमजोरी के साथ बंद हुआ। कारोबार की शुरुआत बढ़त के साथ हुई थी लेकिन बिकवाली के दबाव की वजह से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक गिर कर लाल निशान में आ गए। हालांकि, खरीदार लगातार लिवाली का जोर बना कर शेयर बाजार को सहारा देने की कोशिश करते रहे, जिसके कारण दोनों सूचकांकों की चाल में उतार-चढ़ाव भी होता रहा। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.18 प्रतिशत और निफ्टी 0.21 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए।

- सेंसेक्स और निफ्टी लुढ़के
- बाजार में गिरावट के बावजूद निवेशकों ने की 53 हजार करोड़ की कमाई

बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.27 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ

दिनभर हुई खरीद बिक्री के दौरान आईटी, मीडिया, मेटल, टेलीकॉम और फार्मास्यूटिकल सेक्टर के शेयरों में खरीदारी होती रही। दूसरी ओर कैपिटल गुड्स, रियल्टी, पावर, ऑयल एंड गैस और ऑटोमोबाइल सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में भी लगातार खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.27 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.56 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

टॉप 5 गेनर्स और लूजर्स

दिन भर की खरीद बिक्री के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से टाइटन कंपनी 3.19 प्रतिशत, एलटी माइंडट्री 1.29 प्रतिशत, विप्रो 1.10 प्रतिशत, बीपीसीएल 0.97 प्रतिशत और आईटीसी 0.96 प्रतिशत की मजबूती के साथ आज के टॉप 5 गेनर्स की सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर, सिप्ला 1.46 प्रतिशत, रिलायंस इंडस्ट्रीज 1.42 प्रतिशत, डॉक्टर रेड्डीज लेबोरेट्रीज 1.35 प्रतिशत, कोल इंडिया 1.32 प्रतिशत और ब्रिटानिया 1.29 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज के टॉप 5 लूजर्स की सूची में शामिल हुए।

बीएसई में 4,037 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग

दिन भर के कारोबार में बीएसई में 4,037 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 2,260 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,667 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 110 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,443 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,476 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 967 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए।

मार्केट कैपिटलाइजेशन कारोबार के बाद बढ़ कर 465.66 लाख करोड़ रुपए

बाजार में आई गिरावट के बावजूद मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में हुई खरीदारी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 50 हजार करोड़ रुपए से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन कारोबार के बाद बढ़ कर 465.66 लाख करोड़ रुपए (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी बुधवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 465.13 लाख करोड़ रुपए था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 53 हजार करोड़ रुपए का मुनाफा हो गया।

बीएसई का सेंसेक्स 117.15 अंक की मजबूती के साथ 82,469.79 अंक के स्तर पर खुला

बीएसई का सेंसेक्स 117.15 अंक की मजबूती के साथ 82,469.79 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होते ही खरीदारी के सपोर्ट से ये सूचकांक 264.85 अंक की बढ़त के साथ 82,617.49 अंक के स्तर पर पहुंच गया। हालांकि ये मजबूती अधिक देर कायम नहीं रह सकी, क्योंकि थोड़ी देर बाद ही मुनाफा वसूली शुरू हो जाने की वजह से इस सूचकांक में गिरावट आ गई। लगातार हो रही बिकवाली की वजह से ये सूचकांक 222.20 अंक की कमजोरी के साथ लुढ़क कर 82,130.44 अंक के स्तर तक गिर गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 151.48 अंक की गिरावट के साथ 82,201.16 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

रिलायंस के बोर्ड ने बोनस शेयर देने की मंजूरी दी

एजेंसी । मुंबई

रिलायंस इंडस्ट्रीज के बोर्ड ने आज यानी 5 सितंबर को शेयरधारकों को 1:1 के रेश्यो में बोनस शेयर जारी करने की मंजूरी दे दी है। 1:1 रेश्यो का मतलब है कि एलिजिबल शेयरहोल्डर्स को रिलायंस इंडस्ट्रीज का एक के बदले एक शेयर मिलेगा। पात्र शेयरधारकों का पता लगाने के लिए कंपनी जल्द रिकार्ड डेट की घोषणा करेगी। 1980, 1983, 1997, 2009 और 2017 के बाद यह छठी बार होगा जब कंपनी की ओर से अपने शेयरधारकों को बोनस शेयर जारी होंगे। बोनस इश्यू की रिकॉर्ड डेट अभी निर्धारित नहीं की गई है। रिलायंस ने 29 अगस्त को अपनी AGM से पहले मीटिंग का ऐलान किया था। कंपनियां मुख्य रूप से अपने स्टॉक को रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए ज्यादा एक्सेसिबल बनाने के लिए बोनस शेयर जारी करती हैं, खासकर जब शेयर की कीमत काफी बढ़ जाती है। 2024 में अब तक रिलायंस के शेयर 17% बढ़ चुके हैं और 3,000 के निशान से ऊपर कारोबार कर रहे हैं। कंपनी के शेयर में आज 1.26% की गिरावट रही। ये 38 रुपए गिरकर 2991 रुपए पर बंद हुआ। एक साल में रिलायंस का शेयर 23.41% चढ़ा है। वहीं बीते 6 महीने में शेयर लगभग फ्लैट रहा है। एक महीने में शेयर में करीब 4% की तेजी आई है।

स्टार हेल्थ इंश्योरेंस बनी ब्रेल लिपि में बीमा पॉलिसी लॉन्च करने वाली देश की पहली कंपनी

एजेंसी । मुंबई

देश की सबसे बड़ी खुदरा स्वास्थ्य बीमा कंपनी, स्टार हेल्थ एंड अलाइड इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड (स्टार हेल्थ इंश्योरेंस) ने आज उद्योग में पहली बार ब्रेल लिपि में एक बीमा पॉलिसी लॉन्च करने की घोषणा की। यह पॉलिसी नेत्रहीन लोगों तक अपने स्वास्थ्य तथा वित्त संबंधी मामलों पर स्वतंत्र निर्णय लेने में सहायक साबित होगी। यह जानकारी स्टार हेल्थ इंश्योरेंस के एमडी और सीईओ आनंद रॉय ने दी।

SEBI कर्मचारियों का टॉप मैनेजमेंट के खिलाफ प्रदर्शन

काम का दबाव बनाने का आरोप, सेबी चीफ बुच के इस्तीफे की मांग

एजेंसी । मुंबई

सिक्योरिटी एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (SEBI) के सैकड़ों कर्मचारियों ने आज यानी, गुरुवार सुबह टॉप मैनेजमेंट के खिलाफ प्रदर्शन किया। कर्मचारियों का आरोप है कि टॉप मैनेजमेंट काम को लेकर दबाव बनाता है। कर्मचारी सेबी चीफ माधबी पुरी बुच का इस्तीफा मांग रहे हैं। पिछले महीने सेबी के कर्मचारियों ने इस मामले में वित्त मंत्रालय को पत्र लिखकर टॉक्सिक वर्क कल्चर पर चिंता जताई थी। कर्मचारियों ने लीडरशिप पर कठोर भाषा का उपयोग करने, अनरियलिस्टिक टारगेट सेट करने और माइक्रोमैनेजमेंट का आरोप लगाया था।

SEBI ने कहा था- टॉक्सिक वर्क कल्चर की कहानी बना रहे कर्मचारी

आरोपों के सामने आने के बाद बुधवार (4 सितंबर) को सेबी ने बयान जारी कर कहा कि कर्मचारियों को बाहरी तत्व गुमराह कर रहे हैं। SEBI ने कहा, कुछ कर्मचारी निगेटिव वर्क एनवायरमेंट की कहानी को हवा देकर संस्था से कुछ भी मनवाने की कोशिश कर रहे हैं।

- कुछ कर्मचारियों के एक समूह ने जानबूझकर इस मुद्दे को वर्क एनवायरमेंट से जोड़ा।
- कर्मचारी हाउस रेंट अलाउंस (HRA) में 55% की बढ़ोतरी की मांग कर रहे हैं।
- जूनियर अधिकारियों को उनके ग्रुप के बाहर मैसेज मिल रहे हैं, जो उन्हें उकसा रहे हैं।
- मैसेज में कहा जा रहा मीडिया में जाओ, मंत्रालय में जाओ, बोर्ड में जाओ।

टैक्स जमा कराने में किंग खान अव्वल सेलेब्रिटी

एजेंसी । नई दिल्ली

सबसे अधिक इनकम टैक्स चुकाने वाले सेलिब्रिटीज की लिस्ट में एक बार फिर बॉलीवुड के किंग खान अव्वल नंबर पर रहे हैं, जबकि बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन इस लिस्ट में चौथे स्थान पर हैं। फॉर्च्यून इंडिया ने देश के सेलिब्रिटी इनकम टैक्सपेयर्स की लिस्ट जारी की है। इस लिस्ट में क्रिकेटर विराट कोहली भी टॉप 10 में अपनी जगह बनाने में सफल रहे हैं।

- खिलाड़ियों में विराट सबसे आगे
- टॉप 10 में सलमान, अमिताभ और धोनी भी शामिल

सलमान खान टैक्स के रूप में 75 करोड़ रुपए जमा किया

फॉर्च्यून इंडिया की लिस्ट में शाहरुख खान 92 करोड़ रुपए का टैक्स चुका कर नंबर वन के पोजीशन पर पहुंचे हैं। दूसरे नंबर पर तमिल फिल्मों के सुपरस्टार थलपति विजय का नाम है, जिन्होंने टैक्स के रूप में 80 करोड़ रुपेए का भुगतान किया है। सलमान खान टैक्स के रूप में 75 करोड़ रुपेए जमा करवा कर इस सूची में तीसरे नंबर पर हैं। इसी तरह बॉलीवुड के ऑल टाइम हिट अमिताभ बच्चन 71 करोड़ रुपेए का टैक्स जमा करके सूची में चौथे स्थान पर हैं, जबकि क्रिकेट स्टार विराट कोहली 66 करोड़ रुपये के टैक्स का भुगतान करके इस लिस्ट में पांचवें स्थान पर पहुंचे हैं।

यूएस ओपन शीर्ष वरीय महिला खिलाड़ी पोलैंड की इगा को लगातार सेट में मिली शिकस्त, अमेरिका की पेगुला पहले खिताब से बस दो जीत दूर

नंबर एक स्वियातेक का सपना तोड़ पेगुला पहली बार सेमीफाइनल में

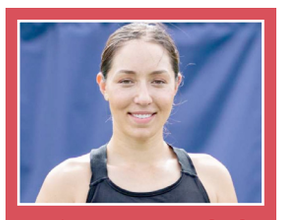

मैं लगातार हार रही थी। सभी पूछते रहते थे पर मेरा जवाब होता था कि मुझे नहीं पता कि मुझे इससे अलग क्या करना है। मुझे बस कोर्ट पर उतरकर मैच जीतना है। इसलिए भगवान का शुक्र है कि मैं ऐसा कर पाई और अंततः मैं कह सकती हूं कि मैं सेमीफाइनलिस्ट हूं।

–जेसिका पेगुला, अमेरिकी टेनिस खिलाड़ी

- 22वीं बार पेगुला ग्रैंड स्लैम में हिस्सा ले रहीं, पहले खिताब का इंतजार
- 05 ग्रैंड स्लैम खिताब इगा जीत चुकीं जिनमें से चार फ्रेंच ओपन हैं

एजेंसी । न्यूयॉर्क

सर्व और वॉली के खेल की दिग्गज दुनिया की नंबर एक टेनिस खिलाड़ी इगा स्वियातेक का दूसरा यूएस ओपन ग्रैंड स्लैम खिताब जीतने का सपना टूट गया। बुधवार रात क्वार्टर फाइनल में मेजबान खिलाड़ी जेसिका पेगुला ने उन्हें लगातार सेट में हराकर उलटफेर करते हुए महिला एकल के सेमीफाइनल में जगह बना ली।

मुचोवा की आसान जीत

फ्रेंच ओपन 2023 के फाइनल में स्वियातेक के खिलाफ हार के साथ उप विजेता रहीं मुचोवा ने 22वीं वरीय बीट्रिज हदाद माइया को 6-1, 6-4 से हराकर लगातार दूसरी बार यूएस ओपन के सेमीफाइनल में जगह बनाई। पिछले साल यूएस ओपन के सेमीफाइनल में कोको गफ के खिलाफ शिकस्त झेलने के बाद मुचोवा ने अपनी दाईं कलाई का ऑपरेशन कराया था। फिर वह लगभग 10 महीने तक टूर से दूर रहीं और जून में वापसी की।

पहली बार अंतिम चार में

30 साल की पेगुला ने पोलैंड की 23 साल की स्वियातेक को 6-2, 6-4 से हराकर पहली बार किसी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। इससे पहले छठी वरीय पेगुला को ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में छह बार शिकस्त का सामना करना पड़ा था। पेगुला ने अपने पिछले 15 मैच हार्ड कोर्ट पर खेलते हुए 14 जीत दर्ज की है। सेमीफाइनल में पेगुला की भिड़ंत चेक गणराज्य की गैरवरीय कैरोलिना मुचोवा से होगी। दूसरे सेमीफाइनल में अमेरिका की 13वीं वरीय एम्मा नवारो का सामना दूसरी वरीय आर्यना सबालेंका से होगा।

दलीप ट्रॉफी

मुशीर ने शतक ठोक भारत बी को संभाला

105 नाबाद रन मुशीर ने 227 गेंद में दस चौके और दो छक्के से बनाए

108 रन की साझेदारी आठवें विकेट के लिए मुशीर और नवदीप सैनी ने की

एजेंसी । बेंगलुरु

ऋषभ पंत की लाल गेंद के क्रिकेट में वापसी निराशाजनक रही। वह दस गेंद तक ही टिक सके लेकिन मुशीर खान के नाबाद शतक ने भारत ए के खिलाफ चार दिवसीय दलीप ट्रॉफी मैच के पहले दिन भारत बी को सात विकेट पर 202 रन तक पहुंचा दिया।

संघर्ष कर संकट से निकाला

मुशीर 14वें ओवर में अभिमन्यु ईश्वरन का विकेट गिरने के बाद मैदान पर उतरे थे। ईश्वरन ने आवेश खान की ऑफ स्टंप से बाहर जाती गेंद पर बल्ला लगाया और विकेटकीपर ध्रुव जुरेल ने डाइव लगा शानदार कैच लपका। पहली बार दलीप ट्रॉफी में खेल रहे मुशीर ने विकेट से मिल रही उछाल का बखूबी सामना करते हुए संयम के साथ खेला। उन्होंने तनुष कोटियान को दो छक्के भी लगाए। मुशीर को 69 के स्कोर पर आवेश ने अपनी ही गेंद पर जीवनदान दिया था। अंडर 19 विश्व कप और रणजी सत्र में शानदार प्रदर्शन करने वाले मुशीर ने कुलदीप यादव की गेंद पर एक रन लेकर शतक पूरा किया।

शतकीय साझेदारी से सहारा दिया

टूर्नामेंट के पहले दिन गुरुवार को 19 वर्ष के मुशीर ने 227 गेंद में नाबाद 105 रन बनाए जिसमें दस चौके और दो छक्के शामिल थे। वहीं नवदीप सैनी ने नाबाद 29 रन की पारी खेली। एक समय भारत बी के सात विकेट 94 रन पर गिर गए थे। लेकिन इन दोनों ने आठवें विकेट के लिए 108 रन की साझेदारी करके टीम को संकट से निकाला। दिसंबर 2022 के बाद लाल गेंद का पहला मैच खेल रहे पंत गैर जिम्मेदाराना शॉट खेलकर आकाश दीप की गेंद पर शुभमान गिल को कैच दे बैठे। यशस्वी जायसवाल ने 59 गेंद में 30 रन बनाए लेकिन वह खलील अहमद की गेंद पर शाश्वत कुमार को कैच देकर लौटे।

बटलर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 सीरीज से बाहर

एजेंसी । लंदन

इंग्लैंड के सीमित ओवरों के कप्तान जोस बटलर चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 सीरीज नहीं खेल सकेंगे। उन्हें वनडे सीरीज से भी बाहर रहना पड़ सकता है। बटलर की जगह जैमी ओवरटन टी-20 टीम में चुने गए हैं जबकि फिल साल्ट कप्तान होंगे। तीन मैचों की टी-20 सीरीज बुधवार से शुरू होगी। वहीं पांच मैचों की वनडे सीरीज 19 सितंबर से खेली जाएगी। जोर्डन कॉक्स को वनडे टीम में कवर के तौर पर रखा गया है।

टी-20 टीम: फिल साल्ट (कप्तान), जोफ्रा आर्चर, जैकब बेथेल, ब्राइडन कार्स, जोर्डन कॉक्स, सैम कुरेन, जोश हुल, विल जैक्स, लियाम लिविंगस्टोन, साकिब महमूद, डैन मूसली, जैमी ओवरटन, आदिल रशीद, रीसे टॉपली, जॉन टर्नर।

महित संधू को विश्व चैंपियनशिप में स्वर्णिम सफलता

एजेंसी । नई दिल्ली

भारत की महित संधू ने दूसरी विश्व बधिर निशानेबाजी में शानदार प्रदर्शन करते हुए महिलाओं की 50 मीटर राइफल प्रोन स्पर्धा का स्वर्ण पदक जीत लिया। जर्मनी के हनोवर में चल रही चैंपियनशिप के पांचवें दिन उनके अलावा अभिनव देशवाल ने भी पुरुषों की 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा का कांस्य पदक जीता।

दूसरा स्वर्ण पदक

यह महित का विश्व बधिर चैंपियनशिप में दूसरा स्वर्ण और कुल तीसरा पदक था। इससे पहले उन्होंने धनुष श्रीकांत के साथ मिश्रित 10 मीटर एयर राइफल में स्वर्ण और 10 मीटर एयर राइफल व्यक्तिगत स्पर्धा में रजत जीता था। महित ने फाइनल में 247.4 का स्कोर बनाया और हंगरी की मीरा बियातोवस्की से 2.2 अंक आगे रहीं। इस भारतीय निशानेबाज ने क्वालीफिकेशन दौर में 617.8 के स्कोर से शीर्ष पर रहकन फाइनल के लिए क्वालीफाई किया था। अन्य भारतीय निशानेबाजों में नताशा जोशी फाइनल में सातवें स्थान पर रहीं।

मुंबई के मैदानों से

सेंट एन ए और मारवाड़ी विद्यालय चैंपियन

दोपहर संवाददाता । मुंबई

फोर्ट की सेंट एन हॉय स्कूल और चर्नी रोड की मारवाड़ी विद्यालय हॉय स्कूल ने सेंट सेबेस्टियन हॉय स्कूल सेन्टेनरी सेलेब्रेशन अंतर स्कूल फुटबॉल चैंपियनशिप की क्रमशः गर्ल्स अंडर-16 और बॉयज अंडर-16 वर्ग में पहला स्थान हासिल किया। गर्ल्स अंडर-16 के फाइनल सेंट एन हॉय स्कूल की ए और बी टीमों के बीच खेला गया, जिसमें ए टीम ने अनुष्का विजयकर द्वारा दागे गए गोल की मदद से 1-0 से जीत दर्ज की। बॉयज अंडर-16 के फाइनल में मारवाड़ी विद्यालय ने सेंट टेरेसा की टीम को 1-0 से हराया। मैच का एकमात्र गोल पार्थ गोहिल ने किया। इसके अलावा कैंपियन स्कूल,

कूपरेज ने फाइनल में मारवाड़ी विद्यालय की टीम को 2-0 से हराते हुए बॉयज अंडर-12 वर्ग के खिताब पर कब्जा किया।

ताइपे ओपन : तनीषा-ध्रुव मिश्रित युगल क्वार्टर फाइनल में

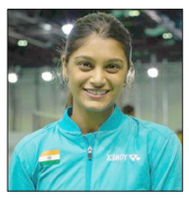

एजेंसी । ताइपे

भारत की तनीषा क्रैस्टो और ध्रुव कपिला की मिश्रित युगल जोड़ी गुरुवार को ताइपे ओपन बैडमिंटन के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई। लेकिन पुरुष एकल खिलाड़ियों को दूसरे दौर में हार का सामना करना पड़ा। तनीषा और ध्रुव ने राउंड-16 में चीनी ताइपे के को-ची चांग और येन यू लिन की जोड़ी को 21-13, 22-20 से हराया। अब तनीषा-ध्रुव का सामना थाईलैंड के पक्कापोन तीरात्सकुल और फातिमास मुएनवोंग की जोड़ी से होगा।

29 सितंबर को होगी बीसीसीआई एजीएम, नए एनसीए का होगा उद्घाटन

बेंगलुरु। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की 93वीं वार्षिक आम बैठक (एजीएम) 29 सितंबर को होगी लेकिन इसमें बोर्ड के नए सचिव का चुनाव होने की संभावना नहीं है। एजीएम शहर के बाहरी इलाके में अत्याधुनिक राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के उद्घाटन के दौरान ही होगी क्योंकि बोर्ड के सभी सदस्य शहर में मौजूद रहेंगे।

ज़ी टीवी का नया शो 'वसुधा' 16 सितंबर से होगा शुरू

टेलीविजन पर नौशीन अली सरदार एक दबंग बॉस लेडी चंद्रिका सिंह चौहान के रोल में वापसी कर रही हैं, जबकि प्रिया ठाकुर एक मासूम जज़्बाती और प्यारी वसुधा सोलंकी के रूप में निभाने जा रही हैं अपना पहला लीड रोल।

इस दिलचस्प कहानी में दो ऐसी औरतों का बड़ा अनोखा रिश्ता है, जिनकी दुनिया एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। फिर दोनों के रास्ते आपस में टकराते हैं जिससे विचारों, आदतों और सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमियों का भी टकराव होता है। यह भारतीय टेलीविजन की किसी भी कहानी से बिल्कुल अलग है। अरविंद बबल प्रोडक्शंस के निर्माण में बना धारावाहिक वसुधा आगामी 16 सितंबर से ज़ी टीवी पर शुरू होने जा रहा है और इसका प्रसारण हर सोमवार से शुक्रवार रात 10 बजे होगा।

भुवन बाम की 'ताजा खबर 2' का ट्रेलर जारी

कॉमेडियन और अभिनेता भुवन बाम की वेब सीरीज 'ताजा खबर' को दर्शकों का काफी प्यार मिला था। यह सीरीज बीते साल 5 जनवरी को डिज्नी+ हॉटस्टार पर रिलीज हुई थी। अब दर्शक 'ताजा खबर' के दूसरे सीजन का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, जो जल्द खत्म हो जाएगा। दरअसल, 'ताजा खबर 2' का ट्रेलर रिलीज हो गया है, जिस पर दर्शक खूब प्यार लुटा रहे हैं। नए सीजन में भुवन की भिड़ंत जावेद जाफरी से होने वाली है। इस सीरीज का प्रीमियर 27 सितंबर, 2024 से डिज्नी+ हॉटस्टार पर होने जा रहा है।

'जिगरा' से सामने आई आलिया भट्ट की पहली झलक

बॉलीवुड अभिनेत्री आलिया भट्ट मौजूदा वक्त में अपनी आने वाली फिल्म 'जिगरा' को लेकर चर्चा में हैं। यह इस साल की बहुचर्चित फिल्मों में से एक है। इस फिल्म आलिया के साथ अभिनेता वेदांग रैना भी मुख्य भूमिका में नजर आने वाले हैं। अब 'जिगरा' से आलिया की पहली झलक सामने आ गई है, जिसमें उनका धांसू अवतार दिख रहा है। वह धधकती आग के बीच हाथ में हथौड़ा लिए नजर आ रही हैं।

भाई-बहन के रिश्ते पर आधारित है फिल्म की कहानी

आलिया ने पोस्टर साझा करते हुए लिखा, 'कहानी बहुत लंबी है और भाई के पास वक्त बहुत कम है।' 'जिगरा' की कहानी जेल तोड़ने की एक घटना पर आधारित है, जिसके केंद्र में भाई-बहन का रिश्ता है। आलिया और वेदांग इस फिल्म भाई-बहन का किरदार निभा रहे हैं। फिल्म से वेदांग की भी पहली झलक सामने आ गई है। यह फिल्म 11 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। आलिया फिल्म का निर्माण करण जौहर के साथ मिलकर कर रही हैं।

'टॉक्सिक' की रिलीज टली

दक्षिण भारतीय सिनेमा के जाने-माने अभिनेता यश पिछले काफी समय से अपनी फिल्म 'टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं, जिसके निर्देशन की कमान गीतू मोहनदास ने संभाली है। जब से इस फिल्म का ऐलान हुआ है, तभी से प्रशंसक इसकी रिलीज का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। अब 'टॉक्सिक' की रिलीज को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी सामने आ रही हैं। ताजा खबर यह है कि फिल्म की रिलीज टाली जा सकती है।

निर्माताओं ने क्यों लिया ये फैसला?

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, निर्माता 'टॉक्सिक' को भव्य बनाने की योजना बना रहे हैं, क्योंकि यह सबसे ज्यादा बजट वाली फिल्मों में से एक है। इसलिए निर्माताओं ने फिल्म की रिलीज को टालने का फैसला लिया है। अब 'टॉक्सिक' अपनी निर्धारित तारीख पर रिलीज नहीं होगी। यह फिल्म 10 अप्रैल, 2025 को रिलीज होने वाली थी, लेकिन अब खबर है कि इसकी रिलीज टाली जा सकती है। फिलहाल इस खबर की आधिकारिक पुष्टि होना बाकी है।

कई अभिनेत्रियों के साथ नजर आएंगे यश

'टॉक्सिक' में यश के साथ कथित तौर पर कियारा आडवाणी, नयनतारा, तारा सुतारिया, श्रुति हासन और हुमा कुरैशी जैसी अभिनेत्रियां नजर आएंगी। इतने सारे कलाकारों के साथ निर्माता अपनी तारीखों को एक साथ लाना चाहते हैं और चाहते हैं कि सब शूटिंग के लिए साथ आए। इस फैसले की वजह से शेड्यूल और लंबा हो गया है, जिससे पहले की योजनाओं को ध्यान में रखते हुए देरी हो रही है। फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है।

फिल्म 'लापता लेडीज' जापान में होगी रिलीज

किरण राव के निर्देशन में बनी फिल्म 'लापता लेडीज' को 1 मार्च, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था। फिल्म की कहानी और तमाम सितारों की अदाकारी लोगों को खूब पसंद आई थी, लेकिन यह बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी। हाल ही में इस फिल्म की स्क्रीनिंग सर्वोच्च न्यायालय में हुई थी, वहीं अब 'लापता लेडीज' जापान में रिलीज होने जा रही है।

4 अक्टूबर, 2024 को रिलीज होगी फिल्म

'लापता लेडीज' 4 अक्टूबर, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है। किरण ने खुद इस खबर की पुष्टि की है। उन्होंने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा किया है। इसके कैप्शन में उन्होंने लिखा, 'फिल्म 'लापाटा लेडीज' 4 अक्टूबर, 2024 से जापान में रिलीज होगी। हम बहुत उत्साहित हैं।' 5 करोड़ रुपये की लागत में बनी इस फिल्म ने घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 20.24 करोड़ रुपये का कारोबार किया था। आमिर खान इस फिल्म के निर्माता हैं।

विक्रांत मैसी की 'सेक्टर 36' का ट्रेलर जारी

विक्रांत मैसी पिछली बार तापसी पन्नू और सनी कौशल के साथ फिल्म 'फिर आई हसीन दिलरुबा' में देखा गया था, जिसमें उनके काम को खूब सराहा गया। यह फिल्म 9 अगस्त, 2024 को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई और तीनों की तिकड़ी दर्शकों को खूब पसंद आई। आने वाले दिनों में विक्रांत फिल्म 'सेक्टर 36' के जरिए दर्शकों का मनोरंजन करते हुए नजर आएंगे।

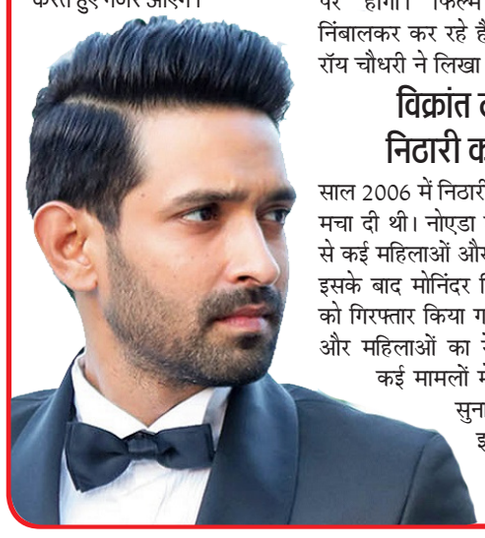

दीपक डोबरियाल भी हैं फिल्म का हिस्सा

'सेक्टर 36' में दीपक डोबरियाल भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। ट्रेलर भी उनकी झलक दिख रही है। पुलिस की वर्दी में दीपक खूब जंच रहे हैं। वह फिल्म में एक गुत्थी सुलझाते हुए दिखाई देंगे। विक्रांत की भी अदाकारी ने दर्शकों का दिल जीत लिया है। 'सेक्टर 36' का प्रीमियर 13 सितंबर, 2024 को नेटफ्लिक्स पर होगा। फिल्म का निर्देशन आदित्य निंबालकर कर रहे हैं। इस फिल्म को बोधायन रॉय चौधरी ने लिखा है।

विक्रांत लेकर आ रहे निठारी कांड पर फिल्म

साल 2006 में निठारी कांड ने देशभर में सनसनी मचा दी थी। नोएडा के निठारी गांव के एक घर से कई महिलाओं और बच्चों के कंकाल मिले थे। इसके बाद मोनिंदर सिंह पंढेर और सुरेंद्र कोली को गिरफ्तार किया गया। आरोप थे कि ये बच्चों और महिलाओं का रेप कर उन्हें मार देते थे। कई मामलों में दोनों को फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। 2015 में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कोली की सजा उम्रकैद में बदल दी थी।

न्यूज ब्रीफ

दिल्ली की जेलों में 3247 अतिरिक्त पदों के सृजन को उपराज्यपाल ने दी मंजूरी

नई दिल्ली। दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने जेल विभाग में 3247 अतिरिक्त पदों के सृजन को मंजूरी दी। उन्होंने इनको अगले छह महीनों में भरने का निर्देश दिया। एलजी के इस फैसले से दिल्ली की तिहाड़, मंडोली और रोहिणी जेलों में स्टाफ की कमी को दूर करने और भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलेगी। नए सृजित पदों में सुपरिटेंडेंट, डिप्टी सुपरिटेंडेंट, असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट, हेड वार्डर, हेड मैट्रन, वार्डर, सेक्शन ऑफिसर, अकाउंट्स ऑफिसर, असिस्टेंट और ड्राइवर शामिल हैं। जेल विभाग ने स्टाफ की कमी और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इन पदों के सृजन का प्रस्ताव रखा था। इसके बाद एआर विभाग और वित्त विभाग द्वारा इस पर वित्तीय स्वीकृति प्राप्त की गई।

उमर ने बड़गाम से भी चुनावी पर्चा भरा

श्रीनगर। नेशनल कॉन्फ्रेंस (NC) के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने गुरुवार को जम्मू-कश्मीर चुनाव के लिए बड़गाम से भी चुनावी पर्चा भरा है। इससे पहले वे गांदरबल से नॉमिनेशन फाइल कर चुके हैं। जम्मू-कश्मीर में 18 सितंबर, 25 सितंबर और 1 अक्टूबर को तीन फेज में चुनाव होने हैं। नतीजे 8 अक्टूबर को आएंगे।

क्रिकेटर रवींद्र जडेजा भाजपा में शामिल

जामनगर। टीम इंडिया के ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए हैं। जडेजा ने 72 टेस्ट मैच में 3036 रन बनाए, वहीं इस फॉर्मेट में 294 विकेट लिए। उन्होंने 197 वनडे मैच खेले, जिसमें 2756 रन और 220 विकेट लिए। जडेजा ने 74 T-20 इंटरनेशनल खेले, जिसमें 515 रन और 54 विकेट लिए। T-20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद उन्होंने इस फॉर्मेट से संन्यास का ऐलान किया था। जडेजा की पत्नी रिवाबा, गुजरात की उत्तर जामनगर सीट से भाजपा विधायक हैं।

पंजाब में पेट्रोल-डीजल महंगा, 3 रुपए यूनिट बिजली सब्सिडी वापस

चंडीगढ़। पंजाब में आम आदमी पार्टी (AAP) सरकार ने पेट्रोल-डीजल पर वैट बढ़ा दिया है। गुरुवार को हुई मीटिंग के बाद वित्तमंत्री हरपाल चीमा ने बताया कि पेट्रोल पर 61 पैसे प्रति लीटर और डीजल पर 92 पैसे प्रति लीटर वैट बढ़ाया गया है। उन्होंने कहा कि इससे सरकार को पेट्रोल से 150 करोड़ और डीजल से 392 करोड़ की अतिरिक्त आमदनी होगी।

सीबीएसई ने डमी स्कूलों पर शिकंजा कसा

नई दिल्ली। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने छात्रों के डमी नामांकन के लिए दिल्ली और राजस्थान के कई स्कूलों को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। फर्जी स्कूलों पर नकेल कसने के लिए सीबीएसई ने 3 सितंबर को राजस्थान और दिल्ली के 27 स्कूलों का औचक निरीक्षण किया था। इन निरीक्षणों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि बोर्ड से संबद्ध स्कूल सीबीएसई द्वारा निर्धारित मानदंडों और उपनियमों का सख्ती से पालन कर रहे हैं और डमी स्कूलों की समस्या पर अंकुश लगा रहे हैं।

कोलकाता दुष्कर्म हत्या प्रकरण फॉलोअप

पुलिस आयुक्त से पदक वापस लेने के लिए राष्ट्रपति को पत्र लिखा

▸▸ बंगाल में नेता प्रतिपक्ष ने कहा, पुलिस जांच में विफल रही

एजेंसी । कोलकाता

कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में ट्रेनी डॉक्टर के रेप-मर्डर को लेकर आज 28वें दिन प्रदर्शन जारी है। बुधवार देर रात डॉक्टर के माता-पिता भी प्रदर्शन में शामिल हुए। पीड़ित के पिता ने कहा- पुलिस शुरुआत से ही इस केस को दबाने की कोशिश कर रही है। डेडबॉडी को पोस्टमार्टम के लिए ले जाने तक हमें पुलिस स्टेशन में इंतजार करना पड़ा। बाद में, जब बेटी का शव हमें सौंपा गया तो एक सीनियर पुलिस अधिकारी ने हमें पैसे देने की पेशकश की। इस बीच पश्चिम बंगाल विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखा है। इसमें उन्होंने पुलिस आयुक्त विनीत गोयल को दिए गए राष्ट्रपति पुलिस पदक और पुलिस पदक वापस लेने का अनुरोध किया। उन्होंने आरोप लगाया कि गोयल के नेतृत्व में कोलकाता पुलिस डॉक्टर से दरिंदगी मामले की जांच करने में विफल रही।

गोयल को ये पदक वर्ष 2013 और 2023 में दिए गए

सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पत्र की प्रति साझा करते हुए उन्होंने कहा कि पुलिस के काम की सराहना के लिए ये पदक दिए जाते हैं लेकिन गोयल ने अपने कार्यों से 168 वर्षों में कड़ी मेहनत से बनाई गई कोलकाता पुलिस की प्रतिष्ठा को धूमिल और पश्चिम बंगाल पुलिस को शर्मसार किया। गोयल को ये पदक वर्ष 2013 और 2023 में दिए गए थे। अधिकारी ने कहा कि ऐसे सभी अपमानजनक कृत्यों की पूरी ईमानदारी से जांच किए जाने की आवश्यकता है और लेकिन इसमें विफल रहने वालों से पुलिस पदक वापस लिए जा सकते हैं। उन्होंने शाह को लिखे पत्र में यह भी कहा कि इस साल 14 अगस्त को सबूतों को नष्ट करने और जानबूझकर की गई उनके द्वारा लापरवाही को मीडिया में जमकर उठाया गया। भाजपा नेता ने कहा, मैं आपके ध्यान में लाना चाहता हूं कि पश्चिम बंगाल सरकार, आरजी कर हत्या मामले में विनीत गोयल के निंदनीय, अपमानजनक और शर्मनाक आचरण के संबंध में आपके उपरोक्त निर्देश के अनुसार उचित कार्रवाई करने में विफल रही है।

ममता इस्तीफा दें, मैं भी मंत्री पद छोड़ दूंगा : मजूमदार

केंद्रीय मंत्री और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने गुरुवार को कहा कि मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को नैतिक आधार पर इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्होंने कहा, यदि वे ऐसा करती हैं तो वे भी मंत्री पद छोड़ देंगे। उनकी यह टिप्पणी मंगलवार को ममता बनर्जी के उस बयान के बाद आई जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और उन सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों के इस्तीफे की मांग की, जहां हाल ही में दुष्कर्म और यौन शोषण की घटनाएं सामने आई थीं। मजूमदार ने यह भी दावा किया कि तृणमूल कांग्रेस आरजी कर अस्पताल के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष को बचाने की कोशिश कर रही है।

पीड़िता के परिजन का आरोप, पुलिस मामले को दबा रही

आरजी कर अस्पताल मामले की पीड़िता के परिजनों ने कोलकाता पुलिस पर शव का जल्दबाजी में अंतिम संस्कार कराकर मामला दबाने का आरोप लगाया है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि घटना सामने आने के बाद एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने उन्हें पैसे देने की कोशिश की थी। पीड़िता के पिता ने कहा, पुलिस शुरू से ही मामले को दबाने की कोशिश कर रही है। हमें शव को देखने की इजाजत नहीं दी गई और जब शव को पोस्टमार्टम के लिए ले जाया गया तब तक हमें थाने में इंतजार करना पड़ा। बाद में जब शव को हमें सौंपा गया, तब एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने हमें धन की पेशकश की लेकिन हमने इसे लेने से तुरंत इनकार कर दिया।

रिक्लेम द नाइट : पुलिस ने दो लोगों को पकड़ा

पीड़िता के लिए न्याय की मांग को लेकर समूचे पश्चिम बंगाल से हजारों महिलाओं ने 'रिक्लेम द नाइट' अभियान के तहत मध्यरात्रि मार्च निकाला। बुधवार रात अभियान के तहत दूसरी बार मार्च निकाला गया और इस दौरान कुछ अवांछित घटनाएं हुईं जिसमें अलग अलग जगहों से पुलिस ने दो लोगों को प्रदर्शनकारी महिलाओं से दुर्व्यवहार के आरोप में हिरासत में लिया। उत्तर बंगाल के माथाभंगा शहर में एक प्रदर्शनकारी पर कथित रूप से तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के सदस्यों ने हमला किया।

पीड़िता पर अमर्यादित पोस्ट को लेकर सीबीआई से रिपोर्ट तलब

कलकत्ता उच्च न्यायालय ने आरजी कर अस्पताल की पीड़िता के बारे में सोशल मीडिया पर अमर्यादित पोस्ट को लेकर सीबीआई को 18 सितंबर तक रिपोर्ट देने को कहा है। एक जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने कहा कि इस तरह की टिप्पणियां समाज का कोई भी व्यक्ति स्वीकार नहीं करेगा। याचिका में अनुरोध किया गया कि इस घटना के संदर्भ में सीबीआई को साइबर अपराध की जांच का निर्देश दिया जाए। केंद्रीय एजेंसी की ओर से पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल अशोक कुमार चक्रवर्ती ने अदालत को बताया कि ऐसे मामलों की जांच के लिए सीबीआई के पास अलग से कोई शाखा नहीं है। उन्होंने कहा कि इन मामलों की निगरानी के लिए राज्य पुलिस के पास विशेष इकाई है। उन्होंने अदालत से अपील की कि बंगाल सरकार की साइबर अपराध शाखा को भी अलग से रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया जाए। कोर्ट ने कहा, वह अगली सुनवाई पर इस पर विचार करेगी।

सेना के ड्रोन्स में चीनी पुर्जे लगाने पर रोक

▸▸ डिफेंस मिनिस्ट्री ने 200 ऑर्डर होल्ड किए

▸▸ मैन्युफैक्चरर्स से कहा- चीनी कंपोनेंट नहीं हैं, इसके सबूत दें

एजेंसी । नई दिल्ली

भारतीय डिफेंस एस्टैब्लिशमेंट ऐसा मैकेनिज्म तैयार कर रहे हैं, जिससे ये सुनिश्चित किया जा सके कि देश की प्राइवेट सेक्टर की कंपनियों से खरीदे गए ड्रोन्स में चीनी कंपोनेंट नहीं हैं। दरअसल, खुफिया एजेंसियों ने उन ड्रोन में चीनी पुर्जों के इस्तेमाल को लेकर चिंता जताई है, जिन्हें भारतीय सेना ने घरेलू निजी कंपनियों से खरीदा है। हाल ही में डिफेंस मिनिस्ट्री ने 200 मीडियम-एल्टीट्यूड लॉजिस्टिक्स ड्रोन के ऑर्डर को होल्ड पर रख दिया था। मंत्रालय ने मैन्युफैक्चरर से कहा था कि वह इस बात का सबूत दे कि इन ड्रोन में चीनी कंपोनेंट इस्तेमाल नहीं हुए हैं। इन ड्रोन्स को चीन से लगी भारत की उत्तरी सीमा पर तैनात किया जाना था।

सेना ने ड्रोन बनाने वाली कंपनियों को चेतावनी दी

आर्मी डिजाइन ब्यूरो के एडिशनल डायरेक्टर मेजर जनरल सी एस मान ने बुधवार को कहा कि इस फ्रेमवर्क को मजबूत बनाने के लिए कई तरीकों पर सोच-विचार किया जा रहा है। रक्षा मंत्रालय के डिपार्टमेंट ऑफ डिफेंस प्रोडक्शन ने इंडस्ट्री बॉडीज FICCI, CII, ASSOCHAM को कहा है कि अपनी सदस्य कंपनियों को कहें कि वे ड्रोन या अन्य संबंधित इक्विपमेंट बनाने में चीनी कंपोनेंट का इस्तेमाल करने से बचें। पूर्वी लद्दाख में चीन के साथ चल रहे सैन्य टकराव को अब पांच साल हो गए हैं, इस दौरान भारतीय सेना ने कई तरीकों के ड्रोन खरीदे हैं। इसमें नैनो, मिनी और माइक्रो ड्रोन से लेकर कामिकाजे, लॉजिस्टिक्स, आर्म्ड स्वार्म्स और फाइटर साइज MALE (मीडियम एल्टीट्यूड, लॉन्ग एंड्यूरेंस) और HALE (हाई एल्टीट्यूड, लॉन्ग एंड्यूरेंस) ड्रोन शामिल हैं।

आप विधायक जारवाल की सजा पर सुनवाई टली

एजेंसी । नई दिल्ली

देवली से आम आदमी पार्टी के विधायक प्रकाश जारवाल और उनके दो अन्य साथियों पर डॉक्टर को आत्महत्या के लिए उकसाने के मामले में सजा पर फैसला टल गया है। गुरुवार को जारवाल की तरफ से पेश हुए प्रॉक्सी अधिवक्ता ने बताया कि मुख्य अधिवक्ता जिन्हें सजा पर बहस करनी है वह उपलब्ध नहीं हैं, ऐसे में बहस के लिए अन्य तारीख दी जाए। इसके बाद स्पेशल जज कावेरी वाबेजा ने मामले को 21 सितंबर तक के लिए टाल दिया। अदालत 21 को सजा पर बहस सुनेगी।

क्या है मामला ?

18 अप्रैल 2020 को डॉक्टर राजेंद्र सिंह ने अपने घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली थी। पुलिस ने डॉक्टर के यहां दो पेज का एक सुसाइड नोट बरामद किया था, जिसमें प्रकाश जारवाल और कपिल नागर को जिम्मेदार ठहराया था। पुलिस ने एक डायरी भी बरामद की थी, जिसमें डॉक्टर के कुछ पानी के टैंकर जल बोर्ड में चलने की बात कही गई है। डायरी में उन टैंकरों के लिए प्रकाश जारवाल पर पैसे मांगने का आरोप लगाया था। डायरी और अन्य साक्ष्यों को देखते हुए इसी साल मार्च में अदालत ने जारवाल को आत्महत्या के लिए उकसाने का दोषी करार दिया था।

पिछले पांच वर्षों में बिजली गिरने से हुई 1,625 लोगों की मौत

भुवनेश्वर। ओडिशा में पिछले पांच वर्षों में बिजली गिरने से 1,625 लोगों की मौत हुई है। राज्य के राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री सुरेश पुजारी ने विधानसभा में इसकी जानकारी दी। भाजपा विधायक टंकाधर त्रिपाठी के सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि वित्तीय वर्ष 2019-20 के दौरान 372 लोगों की और 2020-21 के दौरान 338 और 2021-22 के दौरान 294 लोगों की मौत हुई थी। राज्य में 2022-23 में बिजली गिरने से 334 लोगों की मौत हो गई, जबकि 2023-24 के दौरान 287 लोगों की मौत हुई। सुरेश पुजारी ने बताया कि इस अवधि के दौरान राज्य में सबसे अधित मौतें हुई हैं। उन्होंने आगे कहा कि अधिक खनिज भंडाल वाले राज्यों में बिजली गिरने की घटनाएं अधिक होती है, क्योंकि खनिज बिजली के सुलाचल होते हैं।

शराब नीति केस

केजरीवाल की जमानत पर फैसला सुरक्षित

एजेंसी । नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने कथित आबकारी नीति घोटाले से जुड़े सीबीआई भ्रष्टाचार मामले में जमानत के लिए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की तरफ से दायर याचिका पर फैसला सुरक्षित रखा है। जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्जल भुइयां की पीठ ने दिल्ली सीएम की जमानत याचिका पर सुनवाई की है। वहीं वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने केजरीवाल का पक्ष रखा।

वकील ने जमानत के लिए दी ये दलीलें

जमानत याचिका पर सुनवाई के दौरान केजरीवाल के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने दलील दी कि 'सीबीआई ने आबकारी नीति मामले में जो एफआईआर दर्ज की है, उसमें केजरीवाल का नाम नहीं है। साथ ही केजरीवाल को बीते दिनों अंतरिम जमानत देते हुए भी सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि दिल्ली सीएम समाज के लिए खतरा नहीं हैं।' सिंघवी ने ये भी कहा कि दो बार सुप्रीम कोर्ट और एक बार ट्रायल कोर्ट केजरीवाल को जमानत पर रिहा करने का आदेश दे चुका है।

यौन उत्पीड़न मामला: आंध्र प्रदेश के विधायक को टीडीपी ने किया निलंबित

एजेंसी । अमरावती

यौन उत्पीड़न के आरोप से घिरे सत्यवेदु विधानसभा क्षेत्र से विधायक कोनेती आदिमुलम को उनकी तेलगू देशम पार्टी ने निलंबित कर दिया है। टीडीपी के आंध्र प्रदेश अध्यक्ष पल्ला श्रीनिवास ने एक पत्र जारी कर बताया कि अधिमुला पर लगे यौन उत्पीड़न के आरोपों के चलते उन्हें पार्टी से निलंबित किया जा रहा है।

महिला ने यौन उत्पीड़न का लगाया आरोप

दरअसल, सत्यवेदु विधानसभा क्षेत्र से टीडीपी विधायक कोनेती आदिमुलम पर एक महिला ने यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया है। इस महिला ने हैदराबाद में मीडिया के सामने आकर बताया कि कोनेती ने शुरू से ही उसका यौन उत्पीड़न किया और इस बारे में किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। मैंने इसे पेन कैमरे पर रिकॉर्ड किया ताकि सभी को अपने विधायक के बारे में पता चल सके। विधायक ने सौ बार उसे फोन किए, वह मैसेज भेजता और धमकी देता है। पीड़ित महिला ने बताया कि एक ही पार्टी के होने के कारण कई कार्यक्रमों में उनकी मुलाकात होती रहती थी। विधायक ने मेरा फोन नंबर ले लिया और बार-बार कॉल करना शुरू कर दिया। महिला आरोप लगाया कि विधायक ने मुझे तिरुपति के एक होटल के कमरा नंबर 109 में आने को कहा। वहां उन्होंने मुझे धमकाया और मेरा यौन उत्पीड़न किया।' विधायक ने किसी को बताने पर मुझे और मेरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी। उसने तीन बार मेरा यौन उत्पीड़न किया। आख़िरकार मैंने विधायक आदिमुलम की असली चेहरा उजागर करने के लिए एक पेन कैमरा से सब रिकॉर्ड कर लिया। इस घटना को टीडीपी नेतृत्व ने गंभीरता से लिया। गुरुवार को प्रदेश अध्यक्ष ने विधायक आदिमूलम को पार्टी से निलंबित कर दिया गया।

भारत की मांग पर 2023 में इंटरपोल ने जारी किए 100 रेड नोटिस

नई दिल्ली। इंटरपोल ने भारत की मांग पर 2023 में 100 रेड नोटिस जारी किए हैं। यह संख्या एक साल में सबसे ज्यादा है। 10वें इंटरपोल संपर्क अधिकारी सम्मेलन में सीबीआई के निदेशक प्रवीण सूद ने कहा कि प्रवीण सूद ने कहा कि हमने दुनियाभर के पुलिस बल से कहा है कि वे भारतीय एजेंसियों द्वारा वांछित और सीमा पार रह रहे भगोड़ों को हिरासत में लें। उन्होंने कहा कि इंटरपोल और अंतरराष्ट्रीय कानून प्रवर्तन सहयोगियों की मदद से 2023 में 29 और 2024 में अब तक 19 वांछित अपराधियों को भारत वापस लाया गया है। सूद ने कहा कि इंटरपोल का रेड नोटिस केवल गिरफ्तारी का वारंट नहीं है। बल्कि इसके जरिये दुनियाभर की कानून प्रवर्तन एजेंसियों से मांग की जाती है कि वह प्रत्यर्पण और आत्मसमर्पण जैसी कानूनी कार्रवाई के लिए वांछितों का पता लगाएं और उनको गिरफ्तार करें।

खुलासा सालाना प्रति व्यक्ति खाद्य तेल की खपत 19.2 किलोग्राम के स्तर पर पहुंची, स्वास्थ्य के लिहाज से सालाना 12 किलोग्राम की खपत पर्याप्त

भारत में तेजी से बढ़ रही खाद्य तेल की खपत, स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं

एजेंसी । नई दिल्ली

आर्थिक विकास के साथ-साथ लोगों के रहन-सहन में भी सुधार आ रहा है। नतीजा यह है कि देश में खाद्य तेलों की खपत भी तेजी से बढ़ रही है। बीते 20 वर्ष में प्रति व्यक्ति खाद्य तेल की खपत 2.4 गुना बढ़ कर सालाना 19 किलोग्राम से अधिक हो गई है। अनुमान है कि भविष्य में यह और बढ़ सकती है। दरअसल, अमेरिका और विकसित राष्ट्रों की तुलना में भारत में प्रति व्यक्ति तेल खपत अभी भी कम है। दूसरी तरफ चिकित्सा विशेषज्ञ तेल की खपत बढ़ने को स्वास्थ्य के लिए चिंताजनक भी मान रहे हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि भारत में जलवायु के हिसाब से सालाना 12 किलोग्राम प्रति व्यक्ति तेल खपत ही पर्याप्त है। उससे अधिक खपत पर मेटाबॉलिज्म डिसऑर्डर का खतरा बढ़ सकता है। बता दें कि भोजन में तेल का अधिक सेवन लिपिड प्रोफाइल को खराब कर सकता है। कोलेस्ट्रोल और ट्राईग्लेसेराइड की सीमा बढ़ सकती है। हाल में कार्डियोलॉजी सोसायटी आफ इंडिया की रिपोर्ट में कहा गया था कि देश में 82 फीसदी लोगों का लिपिड प्रोफाइल बिगड़ा हुआ है।

ऐसे बढ़ रही खाद्य तेल की खपत

वर्ष खपत (प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष)	किलोग्राम सालाना
1960	61 3 .2
1980	81 3 .8
2000	01 8 .2
2020	21 19 .2

कार्डियोलॉजी सोसायटी आफ इंडिया की रिपोर्ट में दावा

आयोग ने अपनी रिपोर्ट में आईसीएआर-भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान के सर्वे का भी उल्लेख किया है, जो बताता है कि भारत में मांसाहारी लोग ज्यादा खाद्य तेल का इस्तेमाल कर रहे हैं। मांसाहारी लोगों द्वारा 64 प्रतिशत खपत होती है जो सालाना 14 .2 किलोग्राम है और शाकाहारी लोगों द्वारा सालाना औसत 12 .6 किलोग्राम की खपत है।

भारत आयात पर निर्भर

लगातार बढ़ ही मांग के बीच भारत अपनी खाद्य तेल आवश्यकता का करीब 55 प्रतिशत आयात कर रहा है जबकि घरेलू उत्पादन से 40-45 प्रतिशत की पूर्ति हो पा रही है। बीते वर्ष भी भारत ने 16 .5 मीट्रिक टन खाद्य तेल का आयात किया है।

अमेरिका और विकसित राष्ट्र के मुकाबले कम

रिपोर्ट में संभावना जताई गई है कि आने वर्षों में देश के अंदर खाद्य तेलों की खपत में तेजी से इजाफा होगा क्योंकि वैश्विक स्तर पर खपत को लेकर दो तरह के परिदृश्य हैं। नंबर एक अगर विकसित राष्ट्रों के अध्ययन को देखा जाए तो वहां पर सालाना औसत प्रति व्यक्ति खाद्य तेल की खपत 25 .3 किलोग्राम है। वहीं, दूसरा अध्ययन अमेरिका का है, जहां पर खपत सालाना औसत 40 .3 किलोग्राम प्रति व्यक्ति है। अब अगर पहले अध्ययन के हिसाब से देखा जाए तो वर्ष 2030 तक भारत में 38 .3 मीट्रिक टन और 2024 तक 41 .9 एमटी की मांग बढ़ेगी। इस दौरान मांग और आपूर्ति के बीच अंतर बढ़कर वर्ष 2030 में 22 .3 मीट्रिक टन और वर्ष 2047 में 15 .2 मीट्रिक टन का हो जाएगा, जिसे पूरा करने के लिए मौजूदा आपूर्ति को 2030 तक 2 .9 गुना और 2047 तक 3 .9 गुना करना होगा।

भारत में ज्यादा खपत स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

बेहतर स्वास्थ्य के हिसाब से प्रति व्यक्ति करीब 30 मिलीलीटर खाद्य तेल का इस्तेमाल करना सही है। इससे अधिक होता है तो उससे मेटाबॉलिज्म डिसऑर्डर होने का खतरा रहता है, जिससे वजन बढ़ना, डायबिटीज, ह्दय संबंधी बीमारी के साथ पेट में जलन होने से लेकर कई गंभीर बीमारियां भी पैदा हो सकती हैं। यूरोप और अमेरिका की जलवायु अलग है। वहां पर ठंड अधिक होती है और लोगों की लंबाई भी औसत भारतीय की तुलना में कहीं अधिक होती है, जिस लिहाज से उन्हें प्रतिदिन अतिरिक्त कैलोरी की आवश्यकता होती है लेकिन भारत के परिवेश में ज्यादा खाद्य तेल का इस्तेमाल स्वास्थ्य के लिहाज से सही नहीं है।

- डॉ. नीरज निश्चल,
एडिशनल प्रोफेसर, मेडिसिन विभाग- एम्स